A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 18 जून, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 286, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ममता के 'पदचिह्नों' पर चल रहे टीएमसी के बागी विधायक-सांसद

नीरेंद्र नागर

पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनावों में तृणमूल कांग्रेस की भारी पराजय के बाद पार्टी के विधायक और सांसद जिस तरह अभिषेक बनर्जी की काली करतूतों का बहाना बनाकर ममता बनर्जी से अपना नाता तोड़ रहे हैं, उसने कई लोगों को चौंका दिया है। परंतु ममता बनर्जी पिछले 28-29 सालों से जिस तरह की सिद्धांतविहीन और पलटीमार राजनीति कर रही हैं, उस पर नज़र डालें तो इन जन प्रतिनिधियों का बर्ताव कोई अनोखा नहीं है। वे तो वही कर रहे हैं जो ममता दीदी ने उन्हें सिखाया है।

बाग़ी विधायकों-सांसदों पर मुख्य आरोप यह है कि वे तृणमूल कांग्रेस के टिकट पर जीतने के बाद आज विपक्षी बीजेपी से हाथ मिला रहे हैं। वही बीजेपी जिसको सांप्रदायिक पार्टी बताकर वे जनता के बीच गए थे और चुनाव में जीते थे। लेकिन ममता ने भी 1998 में यही किया था। जब 1 जनवरी 1998 को उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल कांग्रेस बनाई थी तो क्या वह वही काम नहीं कर रही थीं जो आज तृणमूल के बाग़ी सांसद और विधायक कर रहे हैं?

तब ममता की कांग्रेस से क्या शिकायत थी? यही कि कांग्रेस वाम मोर्चे को हराने के लिए राज्य में बीजेपी से हाथ क्यों नहीं मिला रही? तब ममता बीजेपी को सांप्रदायिक नहीं मानती थी- उनका खुद का तब का बयान है कि बीजेपी सांप्रदायिक पार्टी नहीं है। ऐसे में आज अगर ये सांसद या विधायक कह रहे हैं कि बीजेपी सांप्रदायिक पार्टी नहीं है तो वे क्या ग़लत कर रहे हैं - वे तो अपनी प्रिय नेत्री की राह पर ही चल रहे हैं।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पलटूराम कहा जाता है क्योंकि वे चार बार (2013, 2017, 2022 और 2024 में) पलटी मार चुके हैं। लेकिन ममता तो उनसे भी एक क़दम आगे है। वे अब तक पाँच बार पलटी मार चुकी हैं। इस लिहाज़ से उनको भी पलटू दीदी कहा जा सकता है।

आइए, उनके पलटीमार अतीत पर एक नज़र डालते हैं।

पलटी 1 : 1998 में बीजेपी का साथ दिया आपको याद होगा कि नवंबर 1997 में संयुक्त मोर्चा सरकार गिर गई थी और 1998 में नए लोकसभा चुनाव हुए थे। तब तक ममता कांग्रेस को छोड़कर नई पार्टी बना चुकी थीं। उन चुनावों में ममता की तृणमूल कांग्रेस ने बीजेपी के साथ सीटों का तालमेल किया और 7 सीटें जीतीं। लेकिन सरकार में शामिल नहीं हुईं क्योंकि उनको अपना सारा ध्यान राज्य में नवगठित पार्टी को मज़बूत करने में लगाना था। वह सरकार 13 महीनों के बाद गिर गई। 1999 के चुनावों के बाद नई सरकार बनी, उसमें ममता रेल मंत्री बनकर शामिल हुईं।

पलटी 2 : 2001 में जब बंगाल विधानसभा के चुनाव होने वाले थे तो ममता को लगा कि राज्य में कांग्रेस से तालमेल करना अधिक लाभदायक होगा। इसलिए मार्च 2001 में रक्षा भ्रष्टाचार कांड (तहलका स्टिंग ऑपरेशन) के बहाने केंद्र सरकार से त्यागपत्र दे दिया और कांग्रेस से गठजोड़ कर लिया। लेकिन इसके बाद भी वह बंगाल में वाम मोर्चे को नहीं हरा पाईं। वाम मोर्चे को 199 सीटें मिलीं और तृणमल कांग्रेस 31% वोट के साथ केवल 60 सीटों पर जीत हासिल कर पाई।

पलटी 3 : अब राज्य में अगला चुनाव पाँच साल बाद था और केंद्र में बीजेपी की सरकार थी। सो 2003 में ममता बनर्जी फिर से वाजपेयी सरकार में शामिल हो गईं। वाजपेयी सरकार में वह सितंबर 2003 में मंत्री बनीं जबकि डेढ़ साल पहले यानी फ़रवरी 2002 में गुजरात दंगे हो चुके थे। दंगों के लिए हालाँकि उन्होंने मोदी सरकार का इस्तीफ़ा माँगा था लेकिन जब इन दंगों के खिलाफ़ अप्रैल 2002 में लोकसभा में वाजपेयी सरकार के खिलाफ़ निंदा प्रस्ताव लाया गया तो ममता की पार्टी ने वाजपेयी का साथ दिया। इस समर्थन के बदले उनको कुछ ही महीनों बाद फिर से मंत्री बना दिया गया। ममता ने 2004 के लोकसभा चुनाव और 2006 के विधानसभा चुनाव भी बीजेपी के साथ मिलकर लड़े। लेकिन इन दोनों ही चुनावों में जब उनकी पार्टी को बुरी तरह हार मिली - 2004 के लोकसभा चुनाव में तृणमूल को केवल एक सीट मिली और 2006 के विधानसभा चुनाव में पार्टी के वोट ही नहीं घटे (26%) बल्कि सीटें पहले से आधी रह गईं - तब ममता को लगा कि बीजेपी के साथ रहने में कोई लाभ नहीं है।

पलटी 4 : 2007 में ममता फिर से कांग्रेस की शरण में गईं क्योंकि दिल्ली में कांग्रेस सरकार में आ गई थी। 2009 का लोकसभा चुनाव भी दोनों ने मिलकर लड़ा। इसका उन्हें लाभ भी मिला और तृणमूल कांग्रेस ने 19 सीटें जीतीं। 2011 का विधानसभा चुनाव भी ममता ने कांग्रेस के साथ मिलकर लड़ा और कांग्रेस के साथ सरकार बनाई।

पलटी 5 : एक साल बाद ही ममता ने कांग्रेस से संबंध तोड़ लिया क्योंकि अब उनको कांग्रेसी सीढ़ी की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने ठान लिया कि इस सीढ़ी को अब आग लगा देनी है। इसलिए एक-एक करके विपक्ष के विधायकों को तोड़ना शुरू किया और अगले पाँच सालों में कांग्रेस के 42 में से 12 विधायक तोड़े। वाम मोर्चे के भी 4 विधायकों को पार्टी में शामिल कर लिया।

2016-2026 : विपक्ष के 29 विधायक तोड़े- ममता ने विपक्षी विधायकों को तोड़ने का सिलसिला 2016 के चुनाव के बाद भी जारी रखा। हालाँकि उसे इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। फिर भी अगले पाँच सालों में कांग्रेस के 18 और वाम मोर्चे के 4 विधायकों को तृणमूल में शामिल किया। यह सिलसिला 2021 के चुनावों के बाद भी चला जब बीजेपी के टिकट पर चुने गए 7 विधायक तृणमूल कांग्रेस में गए।

इनमें से तीन या चार विधायकों ने ही अपनी सीट से इस्तीफ़ा दिया और तृणमूल के टिकट पर उपचुनाव लड़ा। बाक़ी सब बिना अपनी सीट छोड़े तृणमूल कांग्रेस का साथ देते रहे। स्पीकर उनकी अयोग्यता की अर्जी पर बैठे रहे और वे अपनी विधायकी पूरी करते रहे। कुछ मंत्री भी बने, बाक़ी सत्ता का लाभ लेते रहे।

तो जो काम उस दौर में विपक्ष के दलबदलू विधायकों ने मंत्रिपद, पैसे और सत्ता के लिए किया और ममता बनर्जी को उसमें कुछ भी अनैतिक नहीं लगा, वही काम आज उनके 'अपने' तृणमूलविधायक और सांसद कर रहे हैं तो ममता को शिकायत क्यों होनी चाहिए?

आज बाग़ी तृणमूल विधायक और सांसद भी बिना इस्तीफ़ा दिए बीजेपी के साथ जुड़कर अपनी विधायकी और सांसदी पूरी करने का उद्यम कर रहे हैं। वे ममता दी के दिखाए हुए पथ पर ही चल रहे हैं और इन तीन गुरुमंत्रों का जाप कर रहे हैं- 1.सिद्धांत-विद्धांत बकवास है, 2.अपना हित ही ख़ास है तथा 3.हम सत्ता के दास हैं।

(सत्य हिंदी डॉट कॉम में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

खाड़ी जंग के बाद और ताकतवर हुआ शियादेश

अमेरिकी खुफिया रिपोर्ट में अब तक का सबसे बड़ा खुलासा

तेहरान/वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका-ईरान समझौते के बीच अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने नई चेतावनी दी है। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, जंग के बाद ईरान पहले से ज्यादा ताकतवर हो गया है। खुफिया एजेंसियों का आकलन है कि अब ईरान जब चाहे होर्मुज को बंद कर सकता है। रिपोर्ट से परिचित तीन सूत्रों ने बताया कि युद्ध के बाद ईरान के पास वैश्विक अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने की एक और नई ताकतवर क्षमता आ गई है। अमेरिकी अधिकारियों का मानना है कि ईरान के पास ऐसा हथियार मिल गया है जो परमाणु बम से ज्यादा असरदार है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अगर परमाणु बातचीत टूटती है, तो यमन के हूती विद्रोहियों के जरिए बाब-अल-मंदेब स्ट्रेट में भी संकट पैदा कर सकता है। ऐसे में दुनिया के दो बड़े समुद्री व्यापार मार्ग एक साथ प्रभावित हो सकते हैं।

उद्धव की 'सेना' में बड़ी बगावत

● नौ में से छह सांसदों ने छोड़ दिया यूबीटी का साथ ● संजय राउत ने खोया आपा, प्रेस-कॉन्फ्रेंस में गाली दी ● 4 साल पहले शिंदे 39 विधायकों के साथ अलग हुए थे

नई दिल्ली/मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) के 9 में से 6 सांसदों ने बगावत कर दी है। सूत्रों के अनुसार, छह सांसदों ने शिंदे गुट की शिवसेना में विलय के लिए बुधवार सुबह 9.30 बजे लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को चिट्ठी भेजी है। सूत्रों के अनुसार, चिट्ठी भेजने वाले सांसदों में नागेश पाटिल आष्टीकर और संजय दीना पाटिल का नाम शामिल है। संजय दीना पाटिल ने पार्टी छोड़ने की अटकलों को खारिज किया था। उन्होंने कहा- मैं उद्धव ठाकरे की पार्टी का सांसद हूं और इसी पार्टी में रहूंगा। इधर, शिवसेना के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बागी सांसदों को गाली दी। राउत ने कहा- ये साले। ये बेईमान लोग हैं। बेईमानी उनके खून में हैं।

राउत बोले- सांसदों को 50-50 करोड़ ऑफर- राउत ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान दावा किया कि बागी सांसदों को 50-50 करोड़ रुपए ऑफर हुए हैं। राउत ने कहा- मेरे पास जानकारी है कि सांसदों को 15-15 करोड़ रुपए पहुंचाए गए हैं और उन्हें 3 चार्टर्ड विमानों से दिल्ली लाया गया है। राउत की प्रेस कॉन्फ्रेंस में शिवसेना के 9 में से सिर्फ 3 सांसद, अनिल देसाई, राजाभाऊ वाजे और अरविंद सावंत मौजूद रहे। राउत ने कहा कि बाकी सांसदों को खुद सामने आकर अटकलों का खंडन करना चाहिए। उद्धव और अन्य पार्टी लीडर्स अपने सांसदों से लगातार संपर्क करने और उन्हें मनाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो पा रहा है। पार्टी ने गुरुवार को दिल्ली में संसदीय समिति की बैठक बुलाई है।

29 लाख की लूट का पर्दाफाश हुआ

रिटायर्ड फौजी निकला मास्टरमाइंड

सांवरिया सेठ में चढ़ाया 1.11 लाख चढ़ावा, 5 आरोपी गिरफ्तार

इंदौर। पंढरीनाथ थाना क्षेत्र में 29 लाख 65 हजार रुपए की सनसनीखेज लूट का इंदौर पुलिस ने खुलासा कर दिया है। मामले का मास्टरमाइंड एक रिटायर्ड आर्मी मैन निकला,जिसने अपने चार साथियों के साथ मिलकर वारदात की साजिश रची थी।

पुलिस ने कार्रवाई करते हुए पांचों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। उनके कब्जे से 22 लाख 50 हजार रुपए नकद तथा लूट की रकम से खरीदी गई करीब ढाई लाख रुपए कीमत की कार भी बरामद की गई। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि 24 मई को स्क्रैप कारोबारी मुकुल अग्रवाल की कलेक्शन एजेंसी के कर्मचारी से 29 लाख 65 हजार रुपए लूट लिए गए थे। घटना के बाद पुलिस ने सीसीटीवी

फुटेज,तकनीकी साक्ष्यों और सूचनाओं की मदद से जांच शुरू की। जांच के दौरान मिले सुरागों के आधार पर पुलिस आरोपियों तक पहुंचने में सफल रही।

पूछताछ में खुलासा हुआ कि वारदात का मुख्य आरोपी चंद्रशेखर मुकाती पहले एक अन्य स्क्रैप कारोबारी के यहां कार्य कर चुका था। इसी दौरान उसे मुकुल अग्रवाल के कारोबार,कलेक्शन व्यवस्था और बड़े नकद लेनदेन की जानकारी मिली थी। आर्थिक तंगी और ऐशो-आराम की जिंदगी जीने की चाहत में उसने प्रवीण,अमर, फिरोज और कपिल भंडारी के साथ मिलकर लूट की योजना बनाई। लूट के बाद आरोपी राजस्थान स्थित प्रसिद्ध सांवरिया सेठ मंदिर पहुंचे और 1 लाख 11 हजार रुपए का चढ़ावा चढ़ाया। इसके बाद वे राजस्थान और महाराष्ट्र सहित विभिन्न राज्यों में छिपते रहे।

पुलिस ने लगातार दबिश देकर सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ जारी है और शेष राशि की बरामदगी के प्रयास किए जा रहे हैं। इस सराहनीय कार्यवाही में अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त दिशेष अग्रवाल, सहायक पुलिस आयुक्त सराफा विजय तिवारी, थाना प्रभारी (पंढरीनाथ) सतीश पटेल सहित जोन-4 पुलिस की सभी विशेष टीमों की महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय भूमिका रही।

सीएम डॉ. यादव ने नागदा में श्रीराम दरबार प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव को किया संबोधित

इंदौर-उज्जैन मेट्रोपोलिटन में शामिल हैं नागदा, धार और रतलाम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य और दिव्य मंदिर बना है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर सरयू के किनारे भव्य मंदिर निर्माण हुआ और हमारा 500 वर्ष का लंबा संघर्ष पूर्ण हुआ। भगवान श्रीराम ने

● **गोपाल कृष्ण को आदर्श मानते हुए घर-घर गाय और दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए संकल्पित है राज्य सरकार**

अपने जीवन के महत्वपूर्ण 12 वर्ष चित्रकूट में बिताए थे। राज्य सरकार दो हजार करोड़ रूपए की लागत से भव्य चित्रकूट धाम का निर्माण कर रही है। प्रदेश में जहां-जहां प्रभु श्रीराम के चरण पड़े, हमारी सरकार उन्हें श्रीराम वन गमन पथ में शामिल कर विकसित कर रही है। भगवान श्री गोपाल कृष्ण से संबंधित धर्म स्थलों को भी श्रीकृष्ण पाथेय के रूप में विकसित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने

कहा कि सिंहस्थ 2028 के भव्य और दिव्य आयोजन के लिए हजारों करोड़ के विकास कार्य तेजी से पूर्ण किए जा रहे हैं। उज्जैन, इंदौर और आसपास के सभी जिलों में विकास को गति मिल रही है। इंदौर-उज्जैन मेट्रोपोलिटन में धार, नागदा और रतलाम को भी शामिल किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाजी धाम में फर्श, बाउंड्री बाल और पेयजल जैसी सभी बुनियादी व्यवस्थाएं करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन जिले के नागदा में बालाजी धाम में श्रीराम दरबार प्राण प्रतिष्ठा व ध्वज पूजा कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का श्री बालाजी धाम में भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम में कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गेहलोत विशेष रूप से उपस्थित थे।

प्रदेश में दूध उत्पादन को 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीराम के विराट व्यक्तित्व से हमें मानवीय मूल्यों के साथ जीवन जीने की सीख मिलती है। प्रभु श्रीराम त्याग की प्रतिमूर्ति थे, वे एक आदर्श पुत्र, आदर्श पिता, आदर्श भाई थे। रामराज्य में नागरिकों को किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। इसी भावना के साथ हमारी सरकार गरीब, किसान और नारी शक्ति के सशक्तिकरण द्वारा अंत्योदय के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। भगवान हनुमान के जीवन का प्रत्येक क्षण प्रभु श्रीराम के लिए समर्पित था। हमें हनुमान जी के जीवन की अच्छाईयों को धारण करना चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने गोपाल कृष्ण को आदर्श मानते हुए घर-घर गाय और दूध उत्पादन बढ़ाने का संकल्प लिया है। इसके लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना की शुरुआत की है।

सुप्रभात

मैंने भी चाहा
किसी रोज़ तुम्हारे काँधे पर लिखूँ कविता
बताऊँ तुम्हारे सीने से लग
कैसी तो मादक गंध आती है
तुम्हारी आँखों में दिखते हैं दो द्वीप
होंठों पर होंठ रख देने की
कामना जाग उठती है
तुम्हारे होने भर से महक जाती हैं साँसें
देखने से दहक उठता है मन
चाहा नई उपमा दूँ स्पर्श को
मस्तक को कहूँ पर्वत
भुजाओं को सर्प
दर्ज़ करूँ हथेलियों का ताप
स्त्री-देह को सदियों से कविताओं में गढ़
कितने बड़े कवि हुए
कितने महान कवि
मैंने भी स्त्री-कामना को शब्द दिए
तभी एक आलोचक बुदबुदाया
कलंकिनी।

- श्रुति कुशवाहा

सूना-सूना है 'जून', रूठ गया 'मानसून'

● अबकी है कमजोर, देश के 40 फीसदी हिस्सों में बारिश की कमी ● राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और कर्नाटक के ऊपर बादल नदारद

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून 8 जून से पश्चिमी तट पर लगभग स्थिर है। मौसम एजेंसी स्काईमेट के मुताबिक, मानसून को मुंबई आने में 7-8 दिन लग सकते हैं। इसकी मुख्य वजह बंगाल की खाड़ी में मजबूत लो-प्रेशर एरिया यानी डिप्रेशन नहीं बनना है। मानसून की धीमी रफ्तार की वजह से देश के 723 जिलों में से सिर्फ 103 में ही सामान्य बारिश हुई है। राजस्थान के जयपुर, भरतपुर और कोटा समेत 23 जिलों में आज आंधी-बारिश का यलो अलर्ट है। पिछले 24 घंटे में झुंझुनूं समेत राज्य के 10 जिलों में 2 इंच बारिश हुई है। वहीं, मध्य प्रदेश के रायसेन, छिंदवाड़ा, ग्वालियर और सागर समेत 8 जिलों में आंधी-बारिश का असर रहेगा। बिहार के भागलपुर, पूर्णिया और चंपारण समेत 26 जिलों में आज बारिश का अलर्ट है। मंगलवार को पटना समेत 7 जिलों का तापमान 40 डिग्री से ज्यादा रहा। दिल्ली-एनसीआर में मंगलवार को बारिश और तेज हवाएं चलीं। अधिकतम तापमान सामान्य से 6 डिग्री तक कम दर्ज किया गया, जिससे यह जून का अब तक का सबसे ठंडा दिन रहा। 4 जून को केरल में दस्तक देने के बाद मानसून 13 दिन में 19 राज्यों तक पहुंच चुका है।

10 राज्यों में गर्मी का असर, पारा 40 डिग्री पार- राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना और मध्य प्रदेश के कई शहरों में सोमवार को पारा 40 डिग्री से ज्यादा रहा।

देश में सबसे ज्यादा पारा उत्तर प्रदेश के वाराणसी में दर्ज किया गया। यहां पारा 43 डिग्री रहा। वहीं यूपी के बांदा और प्रयागराज में 42.6, एमपी के खजुराहो 42.2, महाराष्ट्र के ब्रह्मपुरी में 42.2 और ओडिशा के बौध में 42.6 डिग्री रहा। मौसम विभाग के मुताबिक, जेट स्ट्रीम का मौजूदा पैटर्न कमजोर होने पर मानसूनी हवाएं तेज होंगी। अगले 4-5 दिनों में मानसून के महाराष्ट्र, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और अन्य हिस्सों में आगे बढ़ने की परिस्थितियां बन सकती हैं। जेट स्ट्रीम वायुमंडल की ऊपरी परतों में बहने वाली अत्यंत तेज हवाएं हैं। ये आमतौर पर पृथ्वी की सतह से करीब 8 से 15 किलोमीटर की ऊंचाई होती है। ये मानसूनी बादलों और वेस्टर्न डिस्टर्बेंस यानी पश्चिमी विक्षोभ को प्रभावित करती हैं। मध्य प्रदेश में मानसून की एंट्री अब 21 से 23 जून के बीच होने का अनुमान है। आईएमडी (मौसम केंद्र) की माने तो तेलंगाना के भद्राचलम में मानसून एक सप्ताह से अटका हुआ है। इस वजह से एमपी के साथ छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में लेट हो गया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 18 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

नक्सलियों की कमर तोड़ने का मिला ईनाम

● आईपीएस सुंदरराज बने एनआईए में आईजी ● केंद्र सरकार ने सौंपी बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बस्तर क्षेत्र में लंबे समय तक सेवाएं देने वाले वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी सुंदरराज पी को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) में आइजी के पद पर नियुक्त किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इस संबंध में छत्तीसगढ़ सरकार को पत्र जारी कर उनकी प्रतिनियुक्ति को मंजूरी दे दी है। गृह मंत्रालय द्वारा भेजे गए पत्र में कहा गया है कि वर्ष 2003 बैच के आइपीएस अधिकारी सुंदरराज पी को सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति के बाद केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर एनआईए भेजा जा रहा है। राज्य सरकार से उन्हें तत्काल प्रभाव से कार्यमुक्त करने का अनुरोध किया गया है, ताकि वे केंद्र में अपनी नई जिम्मेदारी संभाल सकें। 46 वर्षीय सुंदरराज पी ने बस्तर क्षेत्र में लगभग 12 वर्षों तक सेवा दी है। इनमें से करीब सात वर्ष उन्होंने लगातार बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक (आईजी) अथवा क्षेत्रीय पुलिस प्रमुख के रूप में बिताए। बस्तर रेंज में दक्षिण छत्तीसगढ़ के सात जिले शामिल हैं, जो लंबे समय तक नक्सली गतिविधियों से प्रभावित रहे हैं। सुंदरराज पी को नक्सल विरोधी अभियानों के प्रभावी संचालन और सुरक्षा बलों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है।

ममता सरकार में मंत्री रहे उदयन गुहा गिरफ्तार

सीएम शुभेंदु अधिकारी पर हमले का है आरोप

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की सत्ता जाने के बाद एक-एक करके तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के नेताओं को पुराने मामलों में गिरफ्तार किया जा रहा है। इसी क्रम में बुधवार को पश्चिम बंगाल पुलिस ने कोलकाता के फूलबागान से पूर्व मंत्री उदयन गुहा को गिरफ्तार कर लिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक पूर्व विधायक को तोलाबाजी (जबरन वसूली) के आरोप में कूचबिहार पुलिस ने गिरफ्तार किया है। हालांकि, अभी तक पुलिस ने इस मामले में कोई जानकारी नहीं दी है कि उदयन को किस मामले में गिरफ्तार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक उदयन के ऊपर आरोप हैं कि उन्होंने सरकारी अस्पताल में बच्चों की एक यूनिट बनवाने के नाम पर बाजार से करोड़ों रुपए जुटाए थे। लेकिन उसके बाद इसमें धांधलेबाजी की। इस मामले में शिकायतकर्ता रूपम साहा ने कहा कि यह कार्रवाई होनी ही चाहिए थी। उन्होंने आरोप लगाया कि उदयन ने 2021 के विधानसभा चुनाव के बाद उदयन ने करीब 20 से 25 करोड़ रुपए इकट्ठे किए थे। लेकिन इसके बाद उन्होंने 40 से 50 लाख रुपए का ही काम करवाया।

1.78 लाख करोड़ का हुआ भारत का डिफेंस प्रोडक्शन

● एक साल में 15.6 फीसदी बढ़ा, रक्षा मंत्रालय ने हथियारों की सफलता के बारे में भी बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत का सालाना डिफेंस प्रोडक्शन 2025-2026 में 1.78 लाख करोड़ के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि यह 2024-2025 के 1.54 लाख करोड़ के मुकाबले 15.6 फीसदी बढ़ा है। वहीं, साल 2020-2021 (84,643 करोड़) के मुकाबले इसमें 110 फीसदी का भारी उछाल आया है। वित्तीय वर्ष 2013-2014 में देश का स्वदेशी रक्षा उत्पादन 43,746 करोड़ था, जो अब करीब चार गुना बढ़ चुका है। पीएम मोदी ने भी एक्स (एक्स) पर लिखा कि पिछले 12 सालों में आत्मनिर्भरता, तकनीक, इनोवेशन और स्वदेशी मैन्युफैक्चरिंग के दम पर भारत के रक्षा क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव आया है। इसके साथ ही रक्षा मंत्रालय ने रक्षा सौदों के साथ प्रमुख हथियारों की सफलता के बारे में बताया।

एनसीआर के चारों राज्यों में

बनेगी एक-एक नमो सिटी

● दिल्ली-एनसीआर में लगने वाले प्रतिबंध से राहत मिलेगी, दायरे में कोई परिवर्तन नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में चार ग्रीन फील्ड ब्लू सिटी (नमो सिटी) विकसित होंगी। एनसीआर में शामिल चारों राज्यों दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में एक-एक नमो सिटी होगी, जिन्हें एक चैलेंज के जरिए चुना जाएगा। शहरी मामले मंत्रालय ने नमो सिटी विकास के लिए अगले 5 वर्ष में 5 हजार करोड़ रुपए खर्च करने का प्रावधान रखा है। एनसीआर प्लानिंग बोर्ड की 42वीं बैठक में मंगलवार को यह फैसला हुआ। बैठक के दौरान दिल्ली व हरियाणा के मुख्यमंत्री की मौजूदगी में एनसीआर के लिए रीजनल प्लान-2041 के प्रस्तावों पर चर्चा हुई।

● **प्रदूषण पर अब इलाके के अनुसार लगेंगे नए प्रतिबंध-** एनसीआर में प्रदूषण नियंत्रण से जुड़े प्रतिबंध भविष्य में तीन चरणों में लागू हो सकते हैं, जो कोर एरिया, सेंट्रल एरिया और पूरे एनसीआर के लिए अलग-अलग होंगे। परिवर्तन स्कीम के तहत बीएस-1, 2 और 3 वाहनों को स्क्रैप किया जाएगा और बीएस-4 वाहनों को एनसीआर से बाहर चलने की अनुमति होगी। शुरुआत में यह स्कीम स्वैच्छिक होगी, बाद में इसे तीन चरणों में लागू किया जाएगा। नमो सिटी एक प्रस्तावित मेगा स्मार्ट सिटी परियोजना है, जिसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में विकसित करने की योजना पर विचार किया जा रहा है। इसका उद्देश्य भविष्य की जरूरतों के मुताबिक एक आधुनिक, प्रदूषण-मुक्त और तकनीक आधारित शहर बसाना है। हालांकि केंद्र सरकार ने अभी तक 'नमो सिटी' नाम से कोई आधिकारिक परियोजना घोषित नहीं की है।

● **'ग्रीन और स्मार्ट' होगे दिल्ली के इलाके-** यह शहर पूरी तरह 'ग्रीन और स्मार्ट' होगा। इसके बड़े हिस्से में हरियाली (ग्रीन बेल्ट) विकसित की जाएगी। प्रदूषण रोकने के लिए केवल इलेक्ट्रिक वाहन और साइकिलों को अनुमति दी जाएगी। शहर को 'ग्लोबल मिनीफाइड स्मार्ट सिटी' की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। यहां 24 घंटे बिजली-पानी, भूमिगत यूटिलिटी लाइन, स्मार्ट कचरा प्रबंधन जैसी सुविधाएं होंगी। घरों के पास ही दफ्तर और व्यावसायिक केंद्र होंगे, जिससे ट्रैफिक और प्रदूषण कम होगा।

जी-7 समिट ने भारत को दी बड़ी टेंशन

● रूसी तेल पर खत्म होगी छूट, बढ़ सकती है परेशानी

पेरिस (एजेंसी)। जी-7 शिखर सम्मेलन में नेताओं ने यूक्रेन को और हथियार देने का वादा किया है जिसमें एयर डिफेंस और लंबी दूरी तक मार करने वाले सिस्टम शामिल हैं। साथ ही उन्होंने रूस के तेल और गैस सेक्टर पर और कड़े प्रतिबंध लगाने की तैयारी की भी बात कही है। इसका मतलब है कि आने वाले वक्त में भारत की परेशानी और बढ़ सकती है। जी 7 नेताओं ने एक साझा बयान जारी कर एयर डिफेंस सिस्टम और लंबी दूरी तक मार करने वाले सिस्टम समेत और हथियार भेजने का वादा किया है। साथ ही उन्होंने संकेत दिया है कि रूस के एनर्जी सेक्टर पर सख्ती करने का 'सही समय' आ गया है।

रूस के खिलाफ ईयू ने लगा रखे हैं 21 प्रतिबंध- यूरोपीय संघ (ईयू) पहले ही रूस के खिलाफ प्रतिबंधों के 21 पैकेज लागू कर चुका है। इनमें से सबसे हालिया पैकेज इस महीने की शुरुआत में लागू किया गया था जिसमें मॉस्को की तेल बिक्री और तथाकथित शैडो फ्लीट (गुप्त रूप से काम करने वाले जहाजों के बेड़े) को निशाना बनाया गया था। जी 7 के बयान में ऊर्जा के मामले में मजबूती (एनर्जी रेजिलिएंस) के महत्व पर भी जोर दिया गया है और यूक्रेन को अगली सर्दी से निपटने में मदद करने का वादा किया गया है क्योंकि आमतौर पर रूस कड़ाके की ठंड के दौरान देश के ऊर्जा इंफ्रास्ट्रक्चर को निशाना बनाता है।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू आज से पांच दिवसीय मध्यप्रदेश प्रवास पर

इंदौर, बैतूल, ओंकारेश्वर, जबलपुर, ग्वालियर एवं श्योपुर में विभिन्न कार्यक्रमों में होंगी शामिल

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू 18 जून से 22 जून तक पांच दिवसीय मध्यप्रदेश प्रवास पर रहेंगी। इस दौरान वे इंदौर, बैतूल, खंडवा जिले के श्री ओंकारेश्वर मंदिर, जबलपुर, ग्वालियर और श्योपुर स्थित कूनो नेशनल पार्क में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगी। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू गुरुवार, 18 जून को इंदौर पहुंचेंगी। इसके पश्चात वे बैतूल में ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा आयोजित एम्पावरमेंट ऑफ ट्रायबल सोसायटी बाय स्पिरिचुअल अवेकनिंग कार्यक्रम में शामिल होंगी। साथ ही श्री ओंकारेश्वर पहुंचकर मंदिर में दर्शन एवं आरती में सम्मिलित होंगी। शुक्रवार, 19 जून को राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू अंतर्राष्ट्रीय सिकल सेल दिवस के अवसर पर ओंकारेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगी। शनिवार, 20 जून को राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू जबलपुर पहुंचेंगी। रविवार, 21 जून 2026 को राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में शामिल होंगी।

राष्ट्रपति के मध्यप्रदेश भ्रमण के लिए मिनिस्टर-इन-वेटिंग नामित

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू के मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों के प्रस्तावित भ्रमण के दौरान राज्य शासन ने संबंधित स्थानों पर अगवानी एवं विदाई के लिए मंत्रियों को मिनिस्टर-इन-वेटिंग नामित किया है।

सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार इंदौर में 18 जून को अगवानी के समय जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट और 19 जून को विदाई के समय नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय को दायित्व सौंपा गया है। बैतूल में 18 जून को लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल अगवानी एवं विदाई करेंगे।

खंडवा के ओंकारेश्वर में 18 एवं 19 जून को अगवानी एवं विदाई के समय संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भावसिंह लोधी को जिम्मेदारी दी गई है।

29 आईएएस अधिकारियों का तबादला

भोपाल-रीवा को मिले नए कमिश्नर

● भोपाल संभाग में कर्मवीर शर्मा और रीवा में शीलेन्द्र सिंह नए कमिश्नर नियुक्त

● के.सी. गुप्ता कृषि उत्पादन आयुक्त और अनिरूद्ध मुकर्जी एप्को के महानिदेशक बने

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार ने प्रशासनिक व्यवस्था में एक बड़ा फेरबदल करते हुए भारतीय प्रशासनिक सेवा (भाप्रसे) के 29 वरिष्ठ अधिकारियों के तबादला आदेश जारी किए हैं। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी इस सूची में भोपाल और रीवा संभाग के कमिश्नरों को बदलने के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण विभागों के प्रमुख सचिवों, सचिवों और निदेशकों के प्रभार में भी बदलाव किया गया है।

कर्मवीर शर्मा बने भोपाल कमिश्नर

- आदेश के मुताबिक, भोपाल संभाग के वर्तमान कमिश्नर श्री संजीव सिंह (2005) को अब सचिव, खेल एवं युवा कल्याण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनकी जगह श्री कर्मवीर शर्मा (2010), जो वर्तमान में खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के आयुक्त व सचिव थे, उन्हें भोपाल संभाग का नया कमिश्नर नियुक्त किया गया है।
- वहीं, रीवा संभाग के कमिश्नर बाबू सिंह जामोद (2006) को भोपाल मंत्रालय में नगरीय विकास एवं आवास विभाग का सचिव बनाया गया है। उनकी जगह अब शीलेन्द्र सिंह (2010) रीवा संभाग के नए कमिश्नर होंगे।

इन वरिष्ठ अधिकारियों के विभागों में हुआ बदलाव

- मुकेश चन्द गुप्ता (1998)-सचिव, मानव अधिकार आयोग से अब प्रमुख सचिव, जेल विभाग बनाए गए हैं।
- डॉ. ई. रमेश कुमार (1999)- प्रमुख सचिव, अनुसूचित जाति कल्याण विभाग से अब प्रमुख सचिव, राजस्व विभाग तथा राहत एवं पुनर्वास आयुक्त नियुक्त किए गए हैं।
- विवेक कुमार पोरवाल (2000)- प्रमुख सचिव, राजस्व विभाग से अब प्रमुख सचिव, खनिज साधन विभाग की जिम्मेदारी संभालेंगे।
- दीपक सिंह (2007)- आयुक्त-सह-पंजीयक, सहकारी संस्थाएं से अब मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव बनाए गए हैं।
- अमित तोमर (2009)- पंजीयन महानिरीक्षक से अब प्रबंध संचालक, ऊर्जा विकास निगम तथा आयुक्त, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा का अतिरिक्त प्रभार संभालेंगे।

अपर मुख्य सचिवों को सौंपे गए अतिरिक्त प्रभार

तबादला सूची के साथ ही शासन ने कई वरिष्ठ अधिकारियों को अतिरिक्त जिम्मेदारियां भी सौंपी हैं-

- के.सी. गुप्ता (1992)- अपर मुख्य सचिव, कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग को अपने वर्तमान कर्तव्यों के साथ-साथ कृषि उत्पादन आयुक्त (एपीसी) का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है।
- अनिरूद्ध मुकर्जी (1993)- अध्यक्ष, राजस्व मण्डल ग्वालियर को पर्यावरण आयुक्त तथा महानिदेशक, एप्को का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।
- गुलशन बामरा (1997)- प्रमुख सचिव, जनजातीय कार्य विभाग को प्रमुख सचिव, अनुसूचित जाति कल्याण विभाग का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है।
- सोनिया मीना (2013)- अपर सचिव, वित्त विभाग को आयुक्त-सह-संचालक, संस्थागत वित्त का अतिरिक्त प्रभार मिला है।

इसके साथ ही, नई नियुक्तियों के बाद अपर मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल और मनु वास्तव सहित वरिष्ठ अधिकारी मनीष सिंह और अरविन्द कुमार दुबे कुछ अतिरिक्त प्रभारों से मुक्त होंगे।

ये अधिकारी भी बदले गए

मंत्रालय द्वारा जारी सूची में कई अन्य जिलों और विभागों के अपर सचिव, उप सचिव और निदेशकों के स्तर पर भी बदलाव हुए हैं-

- नेहा मारव्या सिंह (2011) को उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण का आयुक्त-सह-संचालक बनाया गया है।
- मनोज पुष्प (2011) को लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण का संचालक नियुक्त किया गया है।
- रोहित सिंह (2012) अब बजट संचालक की जिम्मेदारी संभालेंगे।
- हर्षिका सिंह (2012) को अपर सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग बनाया गया है।
- भारती जाटव ओगरे (2012) को कोष एवं लेखा का आयुक्त नियुक्त किया गया है।

● ब्रिटेन में सबसे पुराने भारतीय-रेस्तरां पर बंद होने का खतरा

वीरास्वामी की 100 साल पुरानी लीज खत्म, मालिक कोर्ट पहुंचे

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में मौजूद सबसे पुराना भारतीय रेस्तरां वीरास्वामी बंद होने का खतरा बढ़ गया है। जिस इमारत में यह रेस्तरां चलता है, उसका मालिक क्राउन एस्टेट है। क्राउन एस्टेट ब्रिटेन की एक बड़ी सरकारी संपत्ति संस्था है, जो राजा या रानी के नाम पर चलती है। अब क्राउन एस्टेट वीरास्वामी की इमारत में कुछ बदलाव और नया निर्माण करना चाहते हैं। इसी वजह से उन्होंने रेस्तरां का किराये का समझौता (लीज) आगे बढ़ाने से इनकार कर दिया है। वीरास्वामी रेस्तरां की जून 2025 में लीज खत्म हो गई थी। रेस्तरां का कहना है कि अगर लीज नहीं बढ़ाई गई तो उसे 100 साल पुरानी अपनी जगह छोड़नी पड़ेगी। इसलिए उसने इस फैसले को चुनौती देने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया है।

100 साल से चल रहा रेस्तरां

वीरास्वामी की शुरुआत अप्रैल 1926 में हुई थी। यह सिर्फ एक रेस्तरां नहीं बल्कि ब्रिटेन में भारतीय खाने के इतिहास का अहम हिस्सा माना जाता है। पिछले एक सदी में यहां कई मशहूर लोग आ चुके हैं। इनमें ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल, अभिनेत्री विवियन ली, अभिनेता मार्लन ब्रैंडो, लॉरेंस ओलिवियर, चार्ली चैपलिन और यहां तक कि महारानी एलिजाबेथ द्वितीय भी शामिल हैं। रेस्तरां का मेन्यू भारत में जन्मे एडवर्ड पामर ने तैयार किया था।

कर्नाटक में 'रिजॉर्ट पॉलिटिक्स' की वापसी

● एमएलसी चुनाव से पहले कांग्रेस-जेडी (एस) ने बैठाया विधायकों पर पहरा

बेंगलुरु (एजेंसी)। गुरुवार को होने वाले कर्नाटक विधान परिषद (एमएलसी) के सात सीटों के चुनाव से पहले राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। डीके शिवकुमार के राज्य के सीएम बनने के बाद एक बार फिर रिजॉर्ट पॉलिटिक्स की वापसी दिख रही है। कांग्रेस ने इस चुनाव में पांच उम्मीदवार उतारे हैं जबकि भाजपा के दो उम्मीदवार मैदान में हैं। वहीं जेडी (एस) ने अंतिम समय में अपना उम्मीदवार उतारा है। हालांकि उसके पास जीत के लिए पर्याप्त संख्या बल नहीं माना जा रहा है। कांग्रेस विधायक दल की मंगलवार शाम बैठक हुई जिसके बाद पार्टी ने अपने विधायकों को बेंगलुरु दक्षिण जिले के एक रिजॉर्ट में रहने का निर्देश दिया। गुरुवार को सभी विधायकों को सीधे विधानसभा मतदान के लिए ले जाया जाएगा। कर्नाटक में कांग्रेस और जनता दल (सेक्युलर) ने अपने-अपने विधायकों को बेंगलुरु के आसपास अलग-अलग रिजॉर्ट्स में ठहराया है ताकि एमएलसी चुनाव से पहले क्रॉस वोटिंग और गैरहाजिरी की आशंका को रोका जा सके। **सीएम डीके शिवकुमार ने जताई चिंता-** बैठक के दौरान मुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने चिंता जताई कि कुछ कांग्रेस विधायकों से जेडी (एस) संपर्क कर सकती है। इसके बाद विधायकों को यह भी प्रशिक्षण दिया गया कि मतदान कैसे किया जाए क्योंकि इस चुनाव में वरीयता आधारित सिस्टम का इस्तेमाल होता है। मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए केंद्रीय इस्पात और भारी उद्योग मंत्री तथा जेडी(एस) नेता एच. डी. कुमारस्वामी ने उन आरोपों को खारिज कर दिया कि उनकी पार्टी कांग्रेस विधायकों को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रही है।

● **बीजेपी से कुमारस्वामी का निवेदन-** जेडी(एस) ने अपने विधायकों को देवनहल्ली पहुंचा दिया है और अपने गठबंधन सहयोगी भाजपा से अतिरिक्त वोटों को ट्रांसफर करने की अपील की है। एचडी कुमारस्वामी ने कहा, हम एक छोटी पार्टी हैं। हम क्या कर सकते हैं? उनके पास (कांग्रेस के पास) संख्या बल, ताकत और धनबल है। क्या हम उनके खिलाफ मुकाबला कर सकते हैं। इस चुनाव में जीत के लिए 28 प्रथम वरीयता वोट हासिल करना जरूरी होगा जिसके बाद उम्मीदवार को विजेता घोषित किया जाएगा। इस कारण चार कांग्रेस उम्मीदवार- कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष बीके हरिप्रसाद, टिप्पन्नप्पा कमकनूर, पीवी मोहन और शिवन्ना मल्लावली और दो भाजपा उम्मीदवार- लिंगराज पाटिल और रघु कौटिल्य को आरामदायक जीत मिलने की संभावना जताई जा रही है। सातवीं सीट के लिए कांग्रेस के पास दो वोटों की कमी बताई जा रही है। हालांकि पार्टी को भरोसा है कि कार्तिक के पक्ष में डाले गए दूसरे वरीयता (सेकंड प्रेफरेंस) वोटों की मदद से वह आसानी से जीत हासिल कर लेंगे।

पेंशन की शिकायत पर मंत्री ने वार्ड प्रभारी को फटकारा

मंत्री सारंग बोले- जनहित के मामलों में लापरवाही मंजूर नहीं, कार्रवाई होगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में जनदर्शन कार्यक्रम के दौरान पेंशन संबंधी शिकायत मिलने पर खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग नाराज हो गए। उन्होंने मामले को गंभीरता से लेते हुए संबंधित वार्ड प्रभारी को तलब किया और शिकायत का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मंत्री विश्वास सारंग के बंगले पर प्रतिदिन आयोजित होने वाले जनदर्शन कार्यक्रम में नरेला विधानसभा क्षेत्र के वार्ड क्रमांक-59 स्थित अन्ना नगर की निवासी मंदा सोनवानी, सहला सेनवानी, सुशीला विश्वकर्मा और सोमा सुरेश अपनी पेंशन संबंधी समस्या लेकर पहुंचीं। महिलाओं ने मंत्री को बताया कि पात्र होने के बावजूद उन्हें पेंशन योजना का लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि पूर्व में कई बार प्रयास करने के बावजूद उनकी समस्या का समाधान नहीं हुआ।

वार्ड प्रभारी को बुलाकर लगाई फटकार

शिकायत मिलने के बाद मंत्री सारंग ने तत्काल संज्ञान लिया और वार्ड क्रमांक-59 के प्रभारी रमीजुद्दीन को मौके पर बुलाया। उन्होंने वार्ड प्रभारी को कड़ी फटकार लगाते हुए निर्देश दिए कि पात्र हितग्राहियों की समस्याओं का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित किया जाए।

जनहित के मामलों में लापरवाही नहीं- मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि जनहित से जुड़े मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देश दिए कि पात्र लोगों को शासन की योजनाओं का लाभ समय पर उपलब्ध कराया जाए।

बदमाशों ने कारोबारी को चाकू अड़ाकर लूटा

बैग में रखे थे 2 लाख रुपए, विरोध करने पर की मारपीट, शाहजहांनाबाद पुलिस जांच में जुटी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहजहांनाबाद थाना क्षेत्र में मंगलवार देर रात तीन स्कूटी सवार बदमाशों ने एक कारोबारी को चाकू की नोक पर लूट लिया। बदमाश कारोबारी का बैग छीनकर फरार हो गए। बैग में करीब 2 लाख रुपए रखे हुए थे। पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ लूट का मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, दिलीप अर्थवानी (46) निवासी साईंकृपा अपार्टमेंट, ईदगाह हिल्स प्रभु नगर इलाके में दुकान चलाते हैं। मंगलवार रात रोजाना की तरह वह दुकान बंद कर एक्टिवा से घर लौट रहे थे। उनके पास एक बैग था, जिसमें दुकान के करीब 2 लाख रुपए रखे हुए थे। जब वह रास्ते में पहुंचे, तभी स्कूटी पर सवार तीन बदमाशों ने उनका रास्ता रोक लिया। एक्टिवा रोकते ही बदमाशों ने उनकी गर्दन पर चाकू अड़ा दिया और बैग छीनने लगे। दिलीप ने विरोध किया तो बदमाशों ने उनके साथ मारपीट कर दी।

देर रात दर्ज कराई एफआईआर

मारपीट के बाद बदमाश बैग छीनकर मौके से फरार हो गए। घटना के बाद कारोबारी देर रात थाने पहुंचे और पुलिस को पूरी जानकारी दी। पुलिस ने घटनास्थल की जांच कर आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगालना शुरू कर दिया है। फिलहाल पुलिस बदमाशों की पहचान करने में जुटी है। अधिकारियों के अनुसार जल्द आरोपियों को पकड़ने के लिए टीमों को लगाया गया है।

भोपाल में दूसरी जीआईएस कराने की तैयारी

अगले साल जनवरी में प्रस्तावित

पिछली बार 30.77 लाख करोड़ के प्रस्ताव मिले थे

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में दूसरी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) कराने की तैयारी है। सूत्रों की माने तो अगले साल जनवरी में जीआईएस हो सकती है। पिछली जीआईएस में 30.77 करोड़ रुपए के निवेश के प्रस्ताव मिले थे।

इस बार यह आंकड़ा दोगुना हो सकता है। पहली जीआईएस फरवरी-25 में हुई थी। शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। दो दिन चली जीआईएस में देश के नामी उद्योगपति शामिल हुए थे। उन्होंने मध्य प्रदेश को निवेश के लिए बेहतर बताया था। अब दूसरी जीआईएस भी कराने की तैयारी चल रही है। उद्योग विभाग और मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड ने तैयारी शुरू कर दी है। इसमें भी प्रधानमंत्री मोदी आ सकते हैं।

यहां पर अफसर कर रहे निरीक्षण- पिछली जीआईएस मानव संग्रहालय में हुई थी। इसके चलते पूरे शहर को दुल्हन सा सजाया गया था। 100 करोड़ रुपए से अधिक के सौंदर्यीकरण के कार्य किए गए थे। जानकारी के अनुसार, अगली जीआईएस के लिए लाल परेड ग्राउंड, ज्यूडिशियल एकेडमी के पास नीलबड़-रातीबड़ क्षेत्र और राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की पुरानी जगह का निरीक्षण हो चुका है।

भोपाल मेट्रो की स्पीड बढ़ेगी...

सिग्नलिंग सिस्टम का काम पूरा

जुलाई से दोनों ट्रैक पर दौड़ने लगेगी मेट्रो, शेड्यूल भी तय होगा, सीएमआरएस को बुलाया

भोपाल (नप्र)। अपनी धीमी रफ्तार को लेकर सुर्खियों में आई भोपाल मेट्रो जल्द ही नए कलेवर में नजर आएगी। इसकी न सिर्फ स्पीड बढ़ेगी, बल्कि फेरे भी बढ़ जाएंगे। जुलाई में सिग्नलिंग सिस्टम चालू होने के बाद नया शेड्यूल जारी होगा।

कमिश्नर मेट्रो रेल सेफ्टी की टीम को निरीक्षण के लिए बुलाया है, जो अगले सप्ताह आ सकती है। यही टीम ओके रिपोर्ट देगी। असिस्टेंट कमिश्नर मेट्रो रेल सेफ्टी की टीम पहले ही निरीक्षण कर चुकी है।

बता दें कि सुभाष नगर से एम्स के बीच करीब 7 किलोमीटर लंबे ट्रैक पर सिग्नलिंग सिस्टम का काम पूरा हो गया है। भोपाल और इंदौर मेट्रो में ऑरेंज-येलो लाइन के 2 रूट 30 किलोमीटर लंबे हैं। फिलहाल 12 किमी में ही मेट्रो दौड़ रही है, लेकिन इसकी रफ्तार काफी धीमी है। इस वजह से सवाल उठने लगे हैं। भोपाल मेट्रो तो साइकिल से भी धीमी रफ्तार से दौड़ रही है।

भोपाल मेट्रो की सुस्त रफ्तार- भोपाल में मेट्रो संचालन की सुस्त रफ्तार को तेज करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। सुभाष नगर से एम्स के बीच प्रायोरिटी कॉरिडोर पर सिग्नलिंग सिस्टम का काम पूरा हो गया। करीब 30 किमी के लिए हुए करीब 800 करोड़ रुपए के टेंडर का यह पहला चरण है। मेट्रो को कम यात्री मिल रहे हैं, इसलिए यह दोपहर 12 से शाम 4 बजे के बीच ही चलाई जा रही है।

सिस्टम नहीं होने से एक ही ट्रैक पर दौड़ रही- जानकारी के अनुसार, भोपाल और इंदौर में अभी सिग्नलिंग सिस्टम नहीं है। इस वजह से मेट्रो प्रबंधन को केवल एक ही ट्रैक (डाउन ट्रैक) पर ट्रेन चलानी पड़ रही हैं। यही वजह है कि भोपाल में ट्रेनों की फ्रिक्वेंसी 75 मिनट रखी गई है, जिससे यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ता है। यहां दोपहर 12 से शाम 4 बजे के बाद ही मेट्रो दौड़ रही है।

जिस ट्रैक पर दौड़ती, उसी पर वापसी

सुभाष नगर से एम्स के बीच डाउन ट्रैक पर ही ट्रेन दोनों दिशाओं में चलाई जा रही हैं। यानी जो जा रही है, वह उसी ट्रैक पर लौट रही है। जबकि अप ट्रैक (एम्स से सुभाष नगर) पर ट्रेन नहीं दौड़ती। नए सिस्टम के बाद दोनों तरफ से ट्रेन चलेगी।

मेट्रो की रीढ़ होता है सिग्नलिंग सिस्टम

जानकारों के मुताबिक सिग्नलिंग सिस्टम किसी भी मेट्रो नेटवर्क का सबसे अहम हिस्सा होता है। यही तय करता है कि ट्रेन कितनी दूरी पर चलेगी। ट्रेन की अधिकतम और न्यूनतम गति नियंत्रित करता है। ट्रेनों के बीच सुरक्षित गैप बनाए रखता है। ऑटोमेटेड ऑपरेशन और इमरजेंसी कंट्रोल संभालता है। सिस्टम के बिना मल्टी-ट्रैक ऑपरेशन संभव नहीं होता, जिससे पूरी क्षमता का इस्तेमाल नहीं हो पाता।

दिल्ली मेट्रो जैसी तकनीक लगेगी

भोपाल मेट्रो में वही आधुनिक सिग्नलिंग तकनीक लागू की जा रही है, जो दिल्ली मेट्रो में इस्तेमाल होती है। इस तकनीक के लागू होने के बाद ट्रेन दोनों ट्रैक पर चल सकेंगी। ट्रेनों के बीच का अंतर (हेडवे) कम होगा और फ्रिक्वेंसी तेजी से बढ़ाई जा सकेगी।

नए सिस्टम से यह फायदा- नए सिस्टम के शुरू होने के बाद मेट्रो दोनों ओर से चलेगी। इससे 75 मिनट की टाइमिंग कम होगी। इससे लोगों को आसानी से मेट्रो मिल सकेगी। फेरे भी बढ़ जाएंगे। ऐसे में सुबह और शाम को ऑफिस टाइमिंग पर भी मेट्रो मिल सकेगी

स्पीड पोस्ट की 'स्पीड' पर सवाल

3 दिन की जगह 7 दिन लगे, उपभोक्ता आयोग ने डाक विभाग को माना दोषी

भोपाल (नप्र)। आमतौर पर भरोसे और तेजी के लिए पहचानी जाने वाली स्पीड पोस्ट सेवा इस बार खुद ही सवालों के घेरे में आ गई। एक साधारण सा पार्सल, जिसमें घर का स्नेह और स्वाद दोनों शामिल थे, समय पर नहीं पहुंचा तो मामला उपभोक्ता आयोग तक जा पहुंचा। आयोग ने हाल ही में इसे गंभीर लापरवाही मानते हुए डाक विभाग को फटकार लगाई और मुआवजा देने का आदेश सुनाया। यह फैसला बेंच क्रमांक-1 जिला उपभोक्ता आयोग, भोपाल के अध्यक्ष योगेश दत्त शुक्ला और सदस्य डॉ. प्रतिभा पांडेय ने सुनाया है।

घर का स्वाद और श्रद्धा भेजी थी पार्सल में-भोपाल की ज्योति शर्मा ने 12 जनवरी 2026 को स्पीड पोस्ट के जरिए एक पार्सल भेजा था। इस पार्सल में धार्मिक पुस्तक (श्रीमद्भगवद्गीता), शुद्ध घी से बनी मिठाइयां और कपड़े रखे गए थे। यह पार्सल भोपाल के अरेरा हिल्स उप डाकघर से बुक किया था और इसे सुरक्षित व जल्द पहुंचाने के लिए उन्होंने 1228 रुपए का शुल्क भी चुकाया।

एक पार्सल 3 दिन में, दूसरा 7 दिन में, यहीं से शुरू हुआ विवाद- दिलचस्प बात यह है कि ज्योति शर्मा ने उसी दिन एक और स्पीड पोस्ट भेजा था, जो महज 3 दिन में 15 जनवरी को अपने गंतव्य तक पहुंच गया। लेकिन, दूसरा पार्सल 19 जनवरी को पहुंचा, यानी पूरे 7 दिन की देरी के साथ। यही देरी आगे चलकर कानूनी लड़ाई की वजह बनी।

कहां भेजा गया था पार्सल?

दस्तावेजों के अनुसार पार्सल भोपाल से ही एक अन्य स्थान पर भेजा गया था, जहां सामान्यतः स्पीड पोस्ट 2-3 दिनों में पहुंच जाती है। यानी दूरी कोई बड़ी बाधा नहीं थी, फिर भी देरी होना विभागीय लापरवाही की ओर इशारा करता है।

डाक विभाग नहीं दे पाया देरी का कारण- मामले की सुनवाई के दौरान डाक विभाग यह स्पष्ट नहीं कर सका कि आखिर पार्सल पहुंचाने में 7 दिन क्यों लग गए। आयोग ने कहा कि सिर्फ डिलीवर हो गया कहना पर्याप्त नहीं है, जब तक देरी का ठोस कारण न बताया जाए।

आयोग की सख्त टिप्पणी, प्रीमियम सेवा में लापरवाही बर्दाश्त नहीं- उपभोक्ता आयोग ने अपने फैसले में कहा कि जब उपभोक्ता अतिरिक्त शुल्क देकर स्पीड पोस्ट जैसी प्रीमियम सेवा चुनता है, तो समयबद्ध डिलीवरी उसकी अपेक्षा ही नहीं, अधिकार भी है। बिना किसी उचित कारण के देरी करना सीधे-सीधे 'सेवा में कमी' की श्रेणी में आता है।

डाक विभाग को देना होगा 8 हजार रुपए- आयोग ने निर्देश दिया कि 5,000 रुपए मानसिक व आर्थिक क्षति के लिए दें।

3,000 रुपए वाद व्यय के रूप में चुकाए।

दो माह के भीतर भुगतान करे। समय पर भुगतान न करने पर 9 प्रतिशत वार्षिक ब्याज भी देना होगा।

मुख्यमंत्री ने स्व. बालासाहब देवरस की पुण्यतिथि पर अर्पित की श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तृतीय सरसंघचालक स्व. बालासाहब देवरस की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संदेश में कहा कि स्व. देवरस के नेतृत्व में संगठन का अभूतपूर्व विस्तार हुआ और अनगिनत कार्यकर्ता राष्ट्रसेवा के मार्ग पर आगे बढ़े। सनातन संस्कृति के उत्थान और सामाजिक समरसता के लिए वे संघर्षरत रहे। मातृभूमि की आराधना में समर्पित रहा स्व. बाला साहब देवरस का जीवन प्रेरणा-दीप बनकर सभी के कर्तव्य-पथ को हमेशा आलोकित रखेगा।

मुख्यमंत्री ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर किया नमन- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शौर्य और त्याग के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संदेश में कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन हमें राष्ट्र के प्रति निष्ठावान और कर्तव्यपरायण रहने के लिये प्रेरित है। मातृभूमि की स्वतंत्रता, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित महाराणा प्रताप का जीवन हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।

माथे पर त्रिपुंड और महाकाल का नाम लिखा था, पुणे से हिंदू युवती के साथ आया था

महाकाल मंदिर में मुस्लिम युवक को आधार कार्ड देखकर पीटा

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में भस्मारती की कतार में लगे एक मुस्लिम युवक के साथ कुछ लोगों ने मारपीट कर दी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आने के बाद पुलिस ने युवक को सुरक्षित निकाला। घटना 16 और 17 जून की दरमियानी रात 2 बजे हरसिद्धि चौराहे की है।

पुलिस के अनुसार, पिंपरी (पुणे) का रहने वाला 26 वर्षीय सरफराज शेख एक हिंदू युवती के साथ उज्जैन दर्शन के लिए आया था। रात करीब 2 बजे दोनों महाकाल मंदिर की चलित भस्मारती में शामिल होने के लिए कतार में लगे थे। युवक के माथे पर महाकाल का नाम लिखा हुआ था। उसने चंदन का त्रिपुंड भी लगा रखा था।

आधार कार्ड देखने के बाद भड़का विवाद- कतार में खड़े होने के दौरान बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को युवक पर संदेह हुआ। उन्होंने उसका आधार कार्ड चेक किया तो उसके मुस्लिम होने की बात सामने आई। पहचान उजागर होते ही वहां मौजूद कुछ लोग भड़क गए। हंगामा

शुरू हो गया। देखते ही देखते युवक के साथ मारपीट शुरू हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, युवक लगातार खुद को छोड़ने की गुहार लगाता रहा, लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। इस हंगामे के कारण कतार में लगे अन्य श्रद्धालुओं के बीच भी अफरा-तफरी मच गई।

सोशल मीडिया पर डाला वीडियो

मौके पर मौजूद कुछ लोगों ने इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो मोबाइल में रिकॉर्ड कर लिया और उसे सोशल मीडियो पर डाल दिया। महाकाल थाना प्रभारी गगन बादल ने कहा- युवक को सुरक्षित लाकर उससे पूरी घटना की पूछताछ की गई है। फिलहाल, किसी भी पक्ष की ओर से पुलिस में कोई लिखित शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है। एहतियात के तौर पर युवक और युवती, दोनों के परिजनों को उज्जैन बुलाया गया है। लिखित शिकायत मिलने के बाद नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने पूर्व सीएम स्व. कैलाश नाथ काटजू की जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की

- विधानसभा के सेंट्रल हॉल में स्व. काटजू के चित्र पर किया माल्यार्पण

फोटो : प्रवीण वाजपेई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. कैलाशनाथ काटजू की 139वीं जयंती पर विधानसभा स्थित सेंट्रल हॉल में उन्हें पुष्पांपजि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया से चर्चा में कहा कि स्व. काटजू का जन्म रतलाम जिले की जावरा तहसील में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1957 से 1962 तक प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में दायित्वों का निर्वाहन किया। इसके बाद केंद्रीय स्तर पर रक्षा, कानून सहित कई मंत्रालय का कामकाज भी संभाला। स्व. काटजू विभिन्न राज्यों के राज्यपाल भी रहे। देश की आजादी से पहले भी उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपनी क्षमता और योग्यता से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। मुख्यमंत्री के रूप में मध्यप्रदेश का नेतृत्व करने के साथ-साथ श्री काटजू, पूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के प्रमुख सहयोगी भी रहे। श्री काटजू ने कई स्वशासी संस्थाओं को समृद्ध कर आगे बढ़ाया। प्रदेश के विकास में अपने दूरदर्शी नेतृत्व, उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता और जनसेवा के प्रति समर्पण से उन्होंने प्रदेश तथा देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वर्कर्स और पब्लिक के दिल की जांच कराएगी कांग्रेस

19 जून को राहुल गांधी के बर्थडे पर पीसीसी में लगेगा हेल्थ कैंप

भोपाल (नप्र)। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के जन्मदिन के अवसर पर आगामी 19 जून को भोपाल स्थित प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया जाएगा।

मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी के निर्देश पर कांग्रेस चिकित्सा प्रकोष्ठ ने शिविर की रूपरेखा तैयार की है। शिविर का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य, विशेषकर हृदय संबंधी जांचों को प्राथमिकता देना है।

कोविड के बाद दिल की समस्याएं बढ़ीं- कांग्रेस चिकित्सा प्रकोष्ठ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सिंह धाकड़ ने बताया कि

कोरोना महामारी के बाद लोगों में हृदय संबंधी बीमारियां तेजी से बढ़ी हैं। हाल के दिनों में सडन कार्डियक अरेस्ट (अचानक हृदय गति रुकने) के मामलों और उससे होने वाली मौतों में चिंताजनक वृद्धि दर्ज की गई है।

डॉ. धाकड़ के अनुसार, राहुल गांधी समाज के हर वर्ग से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। इसलिए उनके जन्मदिन को जन-सरोकार से जुड़े इस अभियान के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। शिविर में आने वाले लोगों की मुफ्त ईसीजी जांच के साथ ब्लड प्रेशर, शुगर और अन्य प्राथमिक स्वास्थ्य जांचें भी की जाएंगी।

वैक्सीन के प्रभाव को लेकर उठते रहे हैं सवाल

गौरतलब है कि कोविड के बाद युवाओं और स्वस्थ दिखने वाले लोगों में अचानक आने वाले हार्ट अटैक के मामलों को लेकर कांग्रेस पार्टी और उसके शीर्ष नेता पहले भी केंद्र सरकार पर सवाल उठा चुके हैं।राहुल गांधी समेत कई वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने फार्मा कंपनी एस्ट्राजेनेका (जिसने भारत में कोविशील्ड वैक्सीन बनाई थी) के उस बयान के बाद सरकार को घेरा था, जिसमें कंपनी ने स्वीकार किया था कि दुर्लभ मामलों में वैक्सीन से थ्रोम्बोसाइटोपेनिया सिंड्रोम यानी शरीर में खून के थक्के जमने और प्लेटलेट्स की संख्या कम होने जैसी समस्या हो सकती है। कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया था कि मोदी सरकार ने पर्याप्त जांच के बिना जल्दबाजी में टीकों को मंजूरी दी, जिससे लोगों की सेहत और जीवन के साथ जोखिम पैदा हुआ। पार्टी ने इस मुद्दे पर उच्च स्तरीय जांच समिति अथवा सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में न्यायिक जांच की मांग भी की थी, ताकि कोविड के बाद देश में बढ़ रहे हार्ट अटैक और मौतों के वास्तविक कारणों का पता लगाया जा सके। ऐसे में भोपाल में आयोजित यह स्वास्थ्य शिविर राजनीतिक संदेश के साथ-साथ आम लोगों को इस गंभीर स्वास्थ्य विषय के प्रति जागरूक करने का प्रयास भी माना जा रहा है।

संपादकीय

फिर भी लीक का डर बाकी !

केन्द्र सरकार और नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) नीट की एंट्रेंस री एग्जाम (पुनर्परीक्षा) को इस बार फुल प्रूफ बनाने की हर संभव कोशिश कर रही है। हालांकि इसके बाद भी परीक्षार्थियों को सौ फीसदी भरोसा नहीं है कि इस दफा फिर से पेपर लीक नहीं होगा। क्योंकि परीक्षा के एक हफ्ते पहले एक पेपर लीक होने की खबरें आई थीं, जिसके आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार भी कर लिया है। बहरहाल पूरी परीक्षा की गोपनीयता बरकरार रखने के लिए केन्द्र सरकार ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म टेलीग्राम पर एहतियातन अस्थायी प्रतिबंध लगा दिया है। सरकार का मानना है कि पेपर लीक इसी प्लेटफॉर्म से होते हैं, क्योंकि इस में एडिटिंग और मैसेंजिग की वो सुविधा है, जो दूसरे प्लेटफार्म पर आसानी से उपलब्ध नहीं है। हालांकि कुछ लोग इस कदम की आलोचना भी कर रहे हैं, क्योंकि 22 जून तक लगी रोक के कारण लाखों इंटरनेट यूजरों को भी परेशानी होगी। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि 'मोदी सरकार की पेपर लीक रोकने की नीयत ही नहीं है। इसलिए इस तरह के बेतुके कदम उठाए जा रहे हैं। सेना के जहाज़ों से पेपर ट्रांसपोर्ट करना, टेलीग्राम बंद करना, क्या इन कदमों से पेपर लीक बंद होंगे? बिल्कुल नहीं। क्योंकि हमारे देश में पेपर लीक का अरबों रुपये का धंधा है। गौरतलब है कि मंगलवार को नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने बताया था कि इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 'टेलीग्राम' पर 22 जून तक प्रतिबंध लगा दिया। यह प्रतिबंध इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने आईटी एक्ट 2000 की धारा 69ए के तहत लगाया गया है। साथ ही मंत्रालय ने टेलीग्राम को यह निर्देश भी दिया है कि भारत में पहले से पोस्ट किए गए मैसेज को एडिट करने की सुविधा 30 जून 2026 तक के लिए बंद की जाए। एनटीए ने सरकार के इस कदम का स्वागत किया है। नीट की यूजी 2026 पुनर्परीक्षा 21 जून को होने वाली है। यही नहीं पेपर लीक न हो, इसके लिए देश के इतिहास में पहली पार वायुसेना को भी इसमें शामिल किया गया है। परीक्षा के प्रश्न पत्र भारतीय वायुसेना हेलीकॉप्टर्स के जरिए 18 शहरों में भेजे जाएंगे। जिसके लिए तमिलनाडु में ट्रायल किया गया है। इस मॉक ड्रिल का उद्देश्य सुरक्षा इंतजामों को परखना और आपातकालीन स्थिति से निपटने की तैयारियों को जांचना था। ताकि किसी भी तरह की आपात स्थिति से तुरंत निपटा जाए।

बताया जाता है कि नीट-यूजी री-एग्जाम के पेपर एयरफोर्स के C-17 विमान से पटना पहुंच गए हैं। पटना पहुंचने के बाद इन प्रश्न पत्रों को कड़ी सुरक्षा के बीच ट्रकों में लोड कर पोस्ट ऑफिस भेजने की प्रक्रिया हैं। यहां से डाक विभाग के माध्यम से इन्हें बिहार के अलग-अलग जिलों में पहुंचाया जाएगा। पेपर लीक रोकने के लिए अर्ध सैनिक बलों की भी मदद ली जा रही है। इसके अलावा हर परीक्षा केंद्र पर उम्मीदवारों का फेस रिकग्निशन (चेहरे की पहचान) और बायोमेट्रिक उपस्थिति अनिवार्य की गई है। परीक्षा में नकल रोकने और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेज को ब्लॉक करने के लिए परीक्षा केंद्रों पर जैमर लगाए गए हैं। इसके अलावा सीसीटीवी की लाइव फीड सीधे एनटीए के दिल्ली स्थित कंट्रोल रूम को भेजी जाएगी। प्रश्नपत्र तैयार करने वाले विशेषज्ञों और मॉडरेटर्स को भी कड़ी सुरक्षा वाले गुप्त स्थान पर रखा गया है। सोशल मीडिया पर होने वाली मैसेजिंग व चैटिंग पर भी कड़ी नजर रखी जा रही है। सरकार अपने स्तर पर परीक्षा की पवित्रता बनाए रखने की कोशिश तो पूरी तरह कर रही है। लेकिन असल मुद्दा नैतिक ईमानदारी का है। वही नहीं रहेगी तो कोई व्यवस्था पेपर लीक होने से नहीं रोक सकती।

साम्राज्यवाद बनाम न्याय की वैश्विक कसौटी

एक ओर प्रतिरोध की धुरी सक्रिय है, जिसमें शिया-बहुल ईरान, सीरिया और हिज़्बुल्लाह के साथ-साथ सुन्नी हमास और यमन के हूती (ज़ैदी शिया) जैसे 'गैर-राज्य संगठन' शामिल हैं। धार्मिक भिन्नताओं के बावजूद ये सभी एक साझा साम्राज्य-विरोधी मंच पर एकजुट दिखाई देते हैं। इस गठबंधन का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्र में अमेरिकी प्रभुत्व वाली वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देना और मौजूदा शक्ति संतुलन को बदलना है। दूसरी तरफ, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और मिस्र जैसे शक्तिशाली सुन्नी राष्ट्र हैं, जो क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक व्यापार को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानते हैं। इन देशों के लिए फिलिस्तीन के प्रति सक्रिय सैन्य एकजुटता दिखाने के बजाय 'अब्राहम समझौते' जैसे कूटनीतिक प्रयास और पश्चिमी शक्तियों के साथ सुरक्षा गठबंधन कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं।

नजरिया

विवेकानंद माथने

लेखक 'आजादी बचाओ आंदोलन' एवं 'किसान स्वराज आंदोलन' से संबद्ध हैं।

मध्य-पूर्व की राजनीति को अक्सर शिया-सुन्नी विभाजन के चश्मे से देखा जाता है, लेकिन वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में फिलिस्तीन का मुद्दा इस पारंपरिक धारणा को गंभीर रूप से चुनौती देता है। फिलिस्तीनी समाज लगभग पूरी तरह (करीब 90-95 प्रतिशत) सुन्नी है, फिर भी उन्हें सबसे मजबूत और निरंतर समर्थन शिया राष्ट्र ईरान से मिल रहा है। आज का मध्य-पूर्व धार्मिक पहचान के बजाय दो नए ध्रुवों में बंट चुका है।

एक ओर प्रतिरोध की धुरी सक्रिय है, जिसमें शिया-बहुल ईरान, सीरिया और हिज़्बुल्लाह के साथ-साथ सुन्नी हमास और यमन के हूती (ज़ैदी शिया) जैसे 'गैर-राज्य संगठन' शामिल हैं। धार्मिक भिन्नताओं के बावजूद ये सभी एक साझा साम्राज्य-विरोधी मंच पर एकजुट दिखाई देते हैं। इस गठबंधन का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्र में अमेरिकी प्रभुत्व वाली वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देना और मौजूदा शक्ति संतुलन को बदलना है।

दूसरी तरफ, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और मिस्र जैसे शक्तिशाली सुन्नी राष्ट्र हैं, जो क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक व्यापार को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानते हैं। इन देशों के लिए फिलिस्तीन के प्रति सक्रिय सैन्य एकजुटता दिखाने के बजाय 'अब्राहम समझौते' जैसे कूटनीतिक प्रयास और पश्चिमी शक्तियों के साथ सुरक्षा गठबंधन कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं।

इस कूटनीतिक बदलाव के मूल में बड़े आर्थिक गलियारे और वैश्विक आर्थिक हब बनने की महत्वाकांक्षा है। इज़रायल के साथ संबंधों को सामान्य बनाना इन देशों की एक रणनीतिक मजबूरी बन चुकी है, ताकि वे अपने राष्ट्रीय विकास और दीर्घकालिक आर्थिक हितों को सुरक्षित कर सकें। यहाँ स्पष्ट रूप से व्यावहारिक राजनीति फिलिस्तीनी न्याय की पुकार पर हावी होती दिखाई दे रही है।

फिलिस्तीन संघर्ष अब मात्र एक क्षेत्रीय या धार्मिक विवाद नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक न्याय और शक्ति-संतुलन की एक नई कसौटी बन चुका है। अरब जगत का यह वैचारिक और राजनीतिक बिखराव इस वास्तविकता को रेखांकित करता है कि भविष्य में मध्य-पूर्व की दिशा धार्मिक पहचान के बजाय, साम्राज्यवाद के विरुद्ध उभरते नए रणनीतिक गठजोड़ों और शक्ति-समीकरणों से तय होगी।

भले ही अरब देशों की सरकारें अमेरिका या इजरायल के साथ कूटनीतिक संतुलन बनाने का प्रयास करती हैं, लेकिन अरब जन-मानस (अरब स्ट्रीट) का फिलिस्तीन के प्रति भावनात्मक और धार्मिक जुड़ाव इतना गहरा है कि सरकारें इसे नजरअंदाज करने का जोखिम नहीं उठा सकतीं। इसलिए उन्हें फिलिस्तीन के पक्ष में खड़ा होना और प्रतीकात्मक समर्थन देना पड़ता है।

वास्तव में, अरब सरकारों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी आंतरिक स्थिरता और सत्ता-संरक्षण की है। उन्हें डर रहता है कि फिलिस्तीन के समर्थन में उमड़ने वाला जनाक्रोश कहीं उनके ही देशों में सत्ता-विरोधी आंदोलनों को न भड़का दे। 'अरब स्प्रिंग' के अनुभव ने दिखाया है कि जनभावनाएँ जब सड़कों पर उतरती हैं, तो वे शासन की वैधता और सत्ता-व्यवस्था को भी चुनौती दे सकती हैं।

वर्तमान में दुनिया में 57 मुस्लिम बहुल देश और लगभग 2 अरब की मुस्लिम आबादी है, जो वैश्विक जनसंख्या का करीब 25 प्रतिशत हिस्सा है। इतनी विशाल जनसांख्यिकीय और आर्थिक क्षमता होने के बावजूद, यह समुदाय राजनीतिक रूप से गहराई से विभाजित है। 'ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन' जैसी संस्थाओं की निष्क्रियता यह दर्शाती है कि मुस्लिम देश अब भी एक साझा, प्रभावी और निर्णायक रणनीति बनाने में असमर्थ हैं।

यह विशाल आबादी अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों, विविध आर्थिक प्रणालियों और परस्पर विरोधी राष्ट्रीय हितों में बंटी हुई है। यही कारण है कि फिलिस्तीनी मुद्दे पर व्यापक जन-समर्थन के बावजूद इन देशों की भूमिका अक्सर कूटनीतिक बयानों और प्रतीकात्मक विरोध तक सीमित रह जाती है।

इस संघर्ष ने यह भ्रांति भी तोड़ दी कि मुस्लिम देश एकजुट होकर न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं। वास्तविकता इसके सर्वथा विपरीत है। जहाँ फिलिस्तीनी जनता अपने अस्तित्व और न्याय के लिए संघर्षरत है, वहीं अधिकांश मुस्लिम राष्ट्र अपनी आंतरिक सुरक्षा, सत्ता के संरक्षण और वैश्विक शक्तियों के साथ अपने व्यापारिक संबंधों के अंतर्विरोधों में उलझे हुए हैं।

मुस्लिम जगत का यह बिखराव साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए सबसे बड़ा अवसर बन जाता है, जो इन आंतरिक अंतर्विरोधों का लाभ उठाकर अपने हितों को आगे बढ़ाती हैं। विभिन्न वैश्विक और क्षेत्रीय शक्तियाँ अपने-अपने हितों के अनुसार इस विभाजन का उपयोग करती रही हैं। परिणामस्वरूप मानवीय संवेदनाओं को हाशिए पर धकेल दिया जाता है।

अमेरिका और इज़रायल ने इसी स्थिति का रणनीतिक लाभ उठाते हुए सुन्नी राष्ट्रों की सुरक्षा चिंताओं, विशेषकर ईरान के बढ़ते प्रभाव के भय को हथियार बनाया है और उनके साथ अपने सुरक्षा गठबंधनों को मजबूत किया है। वहीं दूसरी ओर, चीन द्वारा ईरान-सऊदी संबंधों में मध्यस्थता की सफल कोशिश और सीरिया में रूस का बढ़ता प्रभाव यह दर्शाता है कि एक पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती देने वाला वैकल्पिक शक्ति-संतुलन आकार ले रहा है। यह बहुध्रुवीय विश्व के उभरने का संकेत है।

पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियाँ अक्सर लोकतंत्र और मानवाधिकार के आवरण में अपने हितों की रक्षा के लिए एकजुट होकर, एक सुव्यवस्थित इकाई की तरह काम करती हैं। अपने आर्थिक वर्चस्व और सामरिक नियंत्रण को बनाए रखने के लिए वे कई बार अंतरराष्ट्रीय कानूनों और बुनियादी मानवीय अधिकारों को भी दरकिनार करने में संकोच नहीं करते। इसके विपरीत, उनके विरुद्ध खड़ा प्रतिरोध अक्सर नेतृत्व के संकट, संसाधनों के अभाव और आपसी प्रतिस्पर्धा का शिकार हो जाता है।

साम्राज्यवाद का एक आधुनिक और सूक्ष्म रूप सोच पर नियंत्रण भी है। पश्चिमी मीडिया और वैश्विक डिजिटल मंच सूचनाओं के प्रवाह को इस तरह नियंत्रित करते हैं कि दमित समुदायों के न्यायसंगत प्रतिरोध को आतंकवाद और हमलावर की आक्रामकता को आत्मरक्षा के रूप में स्थापित कर दिया जाता है। यह डिजिटल शक्ति-संतुलन आज के दौर में साम्राज्यवाद का सबसे अदृश्य और घातक हथियार बन चुका है।

फिलिस्तीन अब 'ग्लोबल साउथ' के लिए औपनिवेशिक अन्याय के विरुद्ध साझा एकजुटता का प्रतीक बन चुका है। दक्षिण अफ्रीका द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय न्यायालय' में इजरायल की सैन्य कार्रवाई को चुनौती देना इस तथ्य का ठोस प्रमाण है कि यह संघर्ष अब संकीर्ण संप्रदायवाद की सीमाओं को लांघ चुका है। यह अब केवल एक क्षेत्रीय मुद्दा न रहकर अंतरराष्ट्रीय न्याय व्यवस्था की जवाबदेही का प्रश्न बन गया है।

आज फिलिस्तीन केवल एक भू-राजनीतिक विवाद नहीं, बल्कि साम्राज्यवाद बनाम न्याय की वैश्विक कसौटी बन गया है। यह संघर्ष आत्मनिर्णय के अधिकार और मानवीय गरिमा की बहाली का एक स्पष्ट आह्वान है। यह दुनिया को याद दिलाता है कि जब तक बुनियादी मानवाधिकार सुरक्षित नहीं होते, तब तक न्याय की वैश्विक अवधारणा अधूरी रहती है। (सप्रेस)

लापता हुए मानसून की तलाश

पर्यावरण

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मानसून के अचानक लापता होने से मौसम विभाग की पूर्व में की गई भविष्यवाणी गड़बड़ा गई है। अब उपग्रह से ली गई तस्वीरों से दक्षिण-पश्चिम मानसून के बादल दिखाई नहीं दे रहे हैं। वहीं, दक्षिण और मध्य भारत के कई भूभागों तक मानसून की दस्तक के बावजूद देश के बड़े भू-भाग पर बारिश में भारी गिरावट दर्ज की गई है। दरअसल प्रशांत महासागर में तेजी से बन रही अलनीनो की परिस्थितियां आने वाले 8-10 दिनों में वैश्विक जलवायु और मौसम चक्र को प्रभावित कर सकती हैं। मौसम विज्ञानियों ने चेतावनी दी है कि यह इतिहास के 140 वर्ष में अब तक के सबसे खतरनाक और बड़े अलनीनो में से एक हो सकता है। स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क में मौसम और पर्यावरण विज्ञान के प्राध्यापक पाल राउंडी कहते हैं कि यह सबसे खतरनाक और सबसे ताकतवर अलनीनो हो सकता है। अलनीनो का यह मिजाज पहले से दुनिया में तप रही धरती की आग में घी डालने का काम करेगा। अनुमान लगाए जा रहे है कि सर्दियों तक अलनीनो का मिजाज बिगड़ा रहेगा। इस कारण आशंका है कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में सूखा पड़ेगा। और बाढ़ आएगी या भीषण गर्मी झेलनी पड़ेगी। यहां तक की इससे कई देशों में खाने-पीने के सामान और पानी का संकट पैदा होगा। इस अलनीनो के असर का अनुमान भारतीय मौसम विभाग पहले ही लगा चुका है। इसलिए मौसम विज्ञानी एम रविचंद्रन का कहना है कि प्रशांत महासागर की परिस्थितियों को देखते हुए इसका सीधा असर मानसूनी बारिश पर पड़ेगा। इसके चलते कुछ इलाकों में सूखे की स्थिति पैदा हो सकती है। क्योंकि अभी तक 64 प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई है। अतएव मौसम विभाग पहले ही घोषित कर चुका है कि इस बार 11 वर्षों में सबसे कम बारिश हो सकती है। इसका सीधा असर देश की कृषि पर पड़ेगा। 1988 से भारतीय मौसम विभाग मानसून के पूर्वानुमान लगा रहा है। 1988 से 2025 तक 38 वर्ष के अनुमानों में विभाग की भविष्यवाणी 50 प्रतिशत के करीब सटीक रही हैं। इस बार विभाग के विज्ञानियों ने 26 मई को केरल में मानसून आ जाने का अनुमान लगाया था, जो नहीं आया। बाद में 4 जून से मानसून की आहट आने की बात कही गई। लेकिन मानसून लापता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मौसम में जो बादल पानी बरसाते हैं, उनकी सघनता धीरे-धीरे घट रही है। इससे आशय यह निकलता है कि देश में मानसून में बारिश का प्रतिशत लगातार घट रहा है। दरअसल जो बादल पानी बरसाते हैं, वे आसमान में छह से साढ़े छह हजार फीट की ऊंचाई पर होते हैं। 50 साल पहले ये बादल घने भी होते थे और मोटे भी होते थे। परंतु अब साल दर साल इनकी मोटाई और सघनता कम होती जा रही है। यह अध्ययन सही है। दरअसल महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य 'मेघदूत' दो खंडों में विभाजित प्रणय काव्य है। पूर्वमेघ और उत्तरमेघ, जो संस्कृत में लिखे गए हैं। इनमें सांसारिक प्रेम का अद्भुत वर्णन है। किंतु इनमें महाकवि ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति जिन प्रतीकों से दी है, वे मेघ यानी बादल और बारिश से जुड़े हैं। इनका आशय है कि धरती पर जितने घने वन होगें, आसमान में उतने ही घने और काले बादल छाकर बरसेंगे। कालिदास वैज्ञानिक नहीं, बल्कि संत कवि थे, लेकिन इस तथ्य का खंडन कोई वैज्ञानिक नहीं करता। इस अध्ययन से देश के नीति-नियंताओं को चेतने की जरूरत है, क्योंकि हमारी खेती-किसानी और 70 फीसदी आबादी मानसून की बरसात से ही रोजी-रोटी चलती है और देश की समूची आबादी को अनाज, दालें और तिलहन उपलब्ध कराती है। देश के ज्यादातर व्यवसाय भी कृषि आधारित हैं। देश की 2025-26 की जीडीपी में कृषि का योगदान 16.2 प्रतिशत रहा है, जबकि 2023-24 में यह 18.2 फीसदी था। फिर भी किसान आर्थिक असुरक्षा की चपेट में है। प्रत्येक साल अप्रैल-मई में मानसून आ जाने की अटकलों का दौर शुरू हो जाता है। यदि औसत मानसून आये तो देश में हरियाली और समृद्धि की संभावना बढ़ती है और औसत से कम आये तो पपड़ाई धरती और अकाल की क्रूर परछाईयां देखने में आती हैं। मौसम मापक यंत्रों की गणना के अनुसार यदि 90 प्रतिशत से कम बारिश होती है तो उसे कमजोर मानसून कहा जाता है। 90-96 फीसदी बारिश इस दायरे में आती है। 96-104 फीसदी बारिश को सामान्य मानसून कहा जाता है। यदि बारिश 104-110 फीसदी होती है तो इसे सामान्य से अच्छा मानसून कहा जाता है। 110 प्रतिशत से ज्यादा बारिश होती है तो इसे अधिकतम मानसून कहा जाता है। फिर भी बीते 37 साल में हुई बारिश के आंकड़े बताते हैं कि बादलों के बरसने की क्षमता घट रही है। ऐसा जंगलों के घटते जाने के कारण हो रहा है। मौसम वैज्ञानिकों की बात मानें तो जब उत्तर-पश्चिमी भारत में मई-जून तपता है और भीषण गर्मी पड़ती है तब कम दाव का क्षेत्र बनता है। इस कम दाव वाले क्षेत्र की ओर दक्षिणी गोलार्ध से भूमध्य रेखा के निकट से हवाएं दौड़ती हैं। दूसरी तरफ धरती की परिक्रमा सूरज के इर्द-गिर्द अपनी धुरी पर जारी रहती है। निरंतर चक्कर लगाने की इस प्रक्रिया से हवाओं में मंथन होता है और उन्हें नई दिशा मिलती है। इस तरह दक्षिणी गोलार्ध से आ रही दक्षिणी-पूर्वी हवाएं भूमध्य रेखा को पार करते ही पलटकर कम दबाव वाले क्षेत्र की ओर गतिमान हो जाती हैं। ये हवाएं भारत में प्रवेश करने के बाद हिमालय से टकराकर दो हिस्सों में विभाजित होती हैं। इनमें से एक हिस्सा अरब सागर की ओर से केरल के तट में प्रवेश करता है और दूसरा बंगाल की खाड़ी की ओर से प्रवेश कर उड़ीसा, पश्चिम-बंगाल, बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर-प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल-प्रदेश हरियाणा और पंजाब तक बरसती हैं। अरब सागर से दक्षिण भारत में प्रवेश करने वाली हवाएं आन्ध्र-प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य-प्रदेश और राजस्थान में बरसती हैं। इन मानसूनी हवाओं पर भूमध्य और कश्यप सागर के ऊपर बहने वाली हवाओं के मिजाज का प्रभाव भी पड़ता है। प्रशांत महासागर के ऊपर प्रवाहमान हवाएं भी हमारे मानसून पर असर डालती हैं। वायुमण्डल के इन क्षेत्रों में जब विपरीत परिस्थिति निर्मित होती हैं तो मानसून के रुख में परिवर्तन होता है और वह कम या ज्यादा बरसात के रूप में धरती पर गिरता है। महासागरों की सतह पर प्रवाहित वायुमण्डल की हरेक हलचल पर मौसम विज्ञानियों को इनके भिन्न-भिन्न ऊंचाईयों पर निर्मित तापमान और हवा के दबाव, गति और दिशा पर निगाह रखनी होती है। इसके लिये कम्प्यूटरों, गुब्बारों, वायुयानों, समुद्री जहाजों और रडारों से लेकर उपग्रहों तक की सहायता ली जाती है। इनसे जो आंकड़े इकट्ठे होते हैं उनका विश्लेषण कर मौसम का पूर्वानुमान लगाया जाता है। हमारे देश में 1875 में मौसम विभाग की बुनियाद रखी गई थी। आजादी के बाद से मौसम विभाग में आधुनिक संसाधनों का निरंतर विस्तार होता चला आ रहा है। विभाग के पास देशभर में भू-वेधशालाएं, गुब्बारा केन्द्र, रेडियो, पवन वेधशालाएं, तूफान संवेदी, तूफान सचेतक रडार और उपग्रह चित्र प्रेषण एवं ग्राही केंद्र हैं। इसके अलावा वर्षा दर्ज करने वाले हजारों पानी से भाप बनकर हवा होने पर निगाह रखने वाले केन्द्र, पेड़-पौधों की पत्तियों से होने वाले वाष्पीकरण को मापने वाले, विकिरणमापी एवं भूकंपमापी अनेक वेधशालाएं हैं। लक्षद्वीप, केरल व बेंगलुरू में मौसम केंद्रों के डेटा पर सतत निगरानी रखते हुए मौसम की भविष्यवाणियां की जाती हैं। अंतरिक्ष में छोड़े गए उपग्रहों से भी सीधे मौसम की जानकारियां सुपर कम्प्यूटरों में दर्ज होती रहती हैं। बरसने वाले बादल बनने के लिये गरम हवाओं में नमी का समन्वय जरूरी होता है। हवाएं जैसे-जैसे ऊंची उठती हैं, तापमान गिरता जाता है। अनुमान के मुताबिक प्रति एक हजार मीटर की ऊंचाई पर पारा 6 डिग्री नीचे आ जाता है।

यह अनुपात वायुमण्डल की सबसे ऊपरी परत ट्रोपोपॉज तक चलता है। इस परत की ऊंचाई यदि भूमध्य रेखा पर नापें तो करीब 15 हजार मीटर बैठती है। यहां इसका तापमान लगभग शून्य से 85 डिग्री सेंटीग्रेड नीचे पाया गया है। यही परत ध्रुव प्रदेशों के ऊपर कुल 6 हजार मीटर की ऊंचाई पर भी बन जाती है और तापमान शून्य से 50 डिग्री सेन्टीग्रेड नीचे होता है। इसी परत के नीचे मौसम का गोला या ट्रोपोस्फियर होता है, जिसमें बड़ी मात्रा में भाप होती है। यह भाप ऊपर उठने पर ट्रोपोपॉज के संपर्क में आती है। ठंडी होने पर भाप द्रवित होकर पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदें बनाती है। पृथ्वी से 5-10 किलोमीटर ऊपर तक जो बादल बनते हैं, उनमें बर्फ के बेहद बारीक कण भी होते हैं। पानी की बूंदें और बर्फ के कण मिलकर बड़ी बूंदों में तब्दील होते हैं और वर्षा के रूप में धरती पर टपकना शुरू होते हैं। दुनिया के किसी अन्य देश में मौसम इतना विविध, दिलचस्प, हलचल भरा और प्रभावकारी नहीं है, जितना कि भारत में है। इसका मुख्य कारण है भारतीय प्रायदीप की विलक्षण भौगोलिक स्थिति है। हमारे यहां एक ओर अरब सागर है और दूसरी ओर बंगाल की खाड़ी है और इन सब के ऊपर हिमालय के शिखर हैं। इस कारण देश का जलवायु विविधितापूर्ण होने के साथ प्राणियों के लिये बेहद हितकारी है। इसीलिए पूरे दुनिया के मौसम वैज्ञानिक भारतीय मौसम को परखने में अपनी बुद्धि खपाते हैं। फिर भी इतने अनूठे मौसम का प्रभाव देश की धरती पर क्या पड़ेगा, इसकी सटीक भविष्यवाणी करने में हमारे वैज्ञानिक चूकते रहे हैं। इस सिलसिले में ऐसा माना जाता है कि आयातित सुपर कम्प्यूटरों की भाषा 'अलगोरिथम' का डेटा भारतीय भूगोल के अनुसार नहीं है। अतएव उसके संकेत समझना कठिन होता है। सुपर कम्प्यूटर भले ही आयातित हों, लेकिन इनमें मानसून के डेटा भारतीय मानसूनी भूगोल और अपनी भाषा में हो तो हम सटीक भविष्यवाणी करने में सफल हो जाएंगे। हमें अपने सुपर कम्प्यूटरों में देशी भाषा विकसित करनी होगी ? क्योंकि अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिमालय भारत में हैं, अमेरिका अथवा ब्रिटेन में नहीं ?

भागवत कथा का आवश्यक उपक्रम

आस्था

वीरेंद्र व्यास

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

यूं तो हमारे देश में भागवत कथाओं के आयोजनों की परंपरा वर्षों से चली आ रही है और समाज में धर्म धारा का प्रवाह भागवत कथा पंडितों द्वारा व्यास पीठ से किया जाता चल आ रहा है। टीवी, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग तथा इनके दुष्परिणामों को लेकर विभिन्न प्रकार के तथ्य सामने आते रहते हैं किंतु एक तथ्य यह भी है कि देश के हजारों-लाखों परिवारों में टीवी चैनलों के माध्यम से ही भागवत कथाओं को सुना जाता है। इन कथाओं व भक्ति कार्यक्रमों के माध्यम से एक सकारात्मक संदेश भी पहुंचता है।

यहां रेखांकित करने योग्य बात यह है कि देश के विभिन्न भागों में होने वाली भागवत कथाएं कई परिवारों में टीवी चैनल द्वारा देखी-सुनी जाती है किंतु परिवार, रिश्तेदारों या मोहल्ले के निवासियों द्वारा सामूहिक रूप से बैठकर एक साथ कथा सुनने के अवसर कम ही पाए जाते हैं। यह काम मध्य प्रदेश के उज्जैन के औदीच्य ब्राह्मण समाज परिवार के युवक अंशुल द्विवेदी कर रहे हैं। अंशुल ने पिछले एक दशक से एक अनूठा अभियान शुरू किया है। वो विभिन्न अवसरों पर निमंत्रण पर लोगों के घरों में जाकर सप्त दिवसीय भागवत कथा का पाठ करते हैं। संस्कृत और अंग्रेजी सहित तीन विषयों में पोस्ट ग्रेजुएट अंशुल ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी अध्ययन किया है। वे चाहते तो किसी मीडिया हाउस में नौकरी कर को जारी रख कर अच्छा पैसा व प्रतिष्ठा अर्जित कर सकते थे किंतु उन्होंने भौतिक चमक-दमक के रास्ते की जगह भक्ति, नैतिकता, ज्ञान और धर्म की धारा को प्रवाहित करने का रास्ता चुना। इस ध्येय की पूर्ति के लिए उन्होंने मीडिया के क्षेत्र में शुरू किया शीर्ष की ओर बढ़ता अपना कॅरियर त्याग दिया। अब वे परिवारों के आत्मीय आमंत्रण पर पहुंच कर भागवत कथा गंगा प्रवाहित करते हैं।

संयोग से पिछले माह मई 2026 में उज्जैन के महानंदा नगर क्षेत्र में श्रीमती मंजुला पंड्या के परिवार में आयोजित भागवत कथा के अवसर पर उन्हें उनकी संगीत टीम के साथ सुनने का अवसर मिला। सप्त दिवसीय कथा में वे भागवत के विभिन्न मुख्य पात्रों व घटनाओं जैसे दक्ष, परीक्षित, धुंधकारी, इंद्र, देवहूति, करदपर्षि, बृहस्पति, प्रहलाद, चित्रकेतु, गजेंद्र, ग्राहय बृहस्पति, कपिल, नारद मुनि, मनु, वामन अवतार, कृष्ण, कंस, देवकी, वासुदेव, यशोदा, नंद, नरसिंह अवतार, उद्धव आदि प्रसंगों को पौराणिक संदर्भों के साथ आधुनिक एवं विज्ञानपरक उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। जीवन में नैतिकता की उपस्थिति तथा अंधविश्वासों से दूर रहने के लिए भी विभिन्न कथाओं एवं प्रसंग का उल्लेख कथा का उजला पक्ष है। कथा के बीच अंग्रेजी, संस्कृत एवं संगीतमय भजनों प्रस्तुति श्रद्धालुओं को प्रभावित करती है। यह बात महत्वपूर्ण लगी कि कथा के बीच में बार-बार संगीत एवं नृत्य आदि की बजाय पौराणिक एवं शास्त्रीय प्रसंगों को तथा वर्तमान समाज के सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं के निदान के सिद्धांतों को अधिक समय दिया जाता है।

रुचि का फल अच्छा हो सकता है पर लंबा नहीं चलता। नीति का फल कड़वा हो सकता है पर लंबे समय तक चलता है। वासना को उपासना में बदलना चाहिए। धन संपदा की लक्ष्मी ही श्री नहीं है बल्कि वास्तव में संतुष्टि ही श्री है। भगवान के सामने समस्याओं का रोना गाने की बजाय समाधान की प्रार्थना करना चाहिए। अपने से बड़ों का गुरु का अनुभवी महापुरुषों का आशीर्वाद लेते रहना चाहिए। उनके आशीर्वाद से कर्मों का सुफल प्राप्त होता है। ऐसे अनेकों सकारात्मक उदाहरण एवं सिद्धांतों के माध्यम से भागवत कथा करते हुए निश्चित ही अंशुल द्विवेदी जैसे युवा कथाकार धर्म के मूल सिद्धांतों एवं संस्कृति का संरक्षण करते हुए समाज को और परिवारों को अपने प्राचीन परंपरागत संस्कारों की ओर ले जाने का नैतिक दायित्व निभा रहे हैं। उनका यह प्रयास असंतोष, निराशा, द्वेष, पारिवारिक विघटन जैसी बुराइयों से समाज व परिवारों को निजात दिलाने का एक बड़ा और आवश्यक उपक्रम प्रतीत होता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दल नहीं, पार्टी बनायेंगे हम तो

व्यंग्य

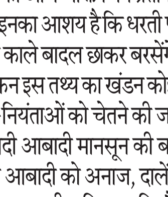

सुधीर नायक

लेखक व्यंग्यकार हैं।

शिब्बू भैया का विचार अपनी खुद की पार्टी डालने का बन रहा है। झंडा-डंडा तय हो चुका है,बस, गंडा तय होना है। गंडा कौन सा बांधेंगे-लाल, नीला, पीला-इस पर विचार चल रहा है।वे कहते हैं दूसरों की पार्टियों में खूब रह लिया। कुछ साल अपनी खुद की पार्टी का भी मजा लिया जाये। तुम कुछ भी कहो,अपनी पार्टी की बात ही अलग होती है। दूसरे की पार्टी में कितना भी आराम हो पर अपनी पार्टी अपनी ही होती है। पार्टी अपनी हो तो सारी प्लेटें अपनी हैं। वैसे भी,आजकल हर जगह बहुत टोका-टाकी है। ये मत बोलो,वो मत खोलो। इधर मत जाओ,उधर मत खाओ। अरे,हम पार्टी में आये हैं कि कोचिंग क्लास में।तुम तो ऐसे डांटते हो,खां,जैसे हम कोई मदरसे में आये हैं। पार्टी में आदमी आता है तो एन्जॉय करने आता है,पहाड़ा रटने नहीं आता।हमें तो कभी स्कूल में भी डांट नहीं पड़ी।स्कूल हम गये ही नहीं। कौन डांटता? दसवीं तक फेल न करने का कानून था सो दसवीं हो गयी। आगे डिग्री में तो कोई दिक्कत की बात थी नहीं। डिग्री वाले तो फेरीवाले हो गये। घर घर घूम रहे हैं कौन सी चाहिए? छांटो बीनो। और फिर इनका बदलाव इतने जल्दी जल्दी होता है कि हड़बड़ा जाता है इंसान।मेरे साथ ऐसा कई बार हुआ जिसे गले लगाना था जल्दबाजी में उसे गाली दे दी और गाली वाले को गले लगा लिया। अपनी पार्टी हो तो ये सब प्राब्लम नही आती।जब तक मन होगा तब तक प्रेम से गाली देंगे जब गले लगाना होगा तब गले लगायेंगे। रोज़ सवेरे सवेरे यह तो नहीं पूछना पड़ेगा कि भाई आज क्या करना है? आज कौन सी माला पहनानी है? फूलों वाली या जूतों वाली। आज का चौघड़िया क्या बोलता है? पगड़ी पहनाना है कि उछालना है? मैंने उन्हें सलाह दी-भैया डालना ही है तो पार्टी मत डालो। दल डालो। पार्टियां बहुत हो गयीं मार्केट में।रस्ता चलता कोई भी आदमी पार्टी डाल भगता है। आजकल दल नहीं बचे। दलों की शार्टेज़ है। इक्का-दुक्का हैं भी सो मरे पड़े हैं। लोग पार्टियों से बोर हो रहे हैं। दल देखेंगे तो उसकी तरफ लपकेंगे। लोग अब टेस्ट बदलना चाहते हैं। सब लोग पार्टियां बना रहे हैं आप एक भन्नाट दल पटक लो। पार्टियों के जमघट में दल अलग छटा बिखेरेगा। और फिर पार्टी विदेशी है दल स्वदेशी। स्वदेशी वाला फ्लेवर आ जायेगा। महाभारत में भी कौरव दल और पांडव दल ही थे। कौरव पार्टी पांडव पार्टी कहां थी? पार्टी बनाना अंग्रेजों ने सिखाया। इस उपनिवेशवादी अवशेष को हम कब तक ढ़ोयेंगे। पार्टी स्त्रीवाचक है और दल पुरुषवाचक। दल और पार्टी का गठबंधन कुदरती है इसलिए निभता है। पार्टी-पार्टी के बीच खटापटी होती है और दल-दल का गठजोड़ दलदल होकर रह जाता है।दल लेकर बाजार में बैठोगे तो कई पार्टियां मंडरायेंगी। मेरा भाषण वाला कीड़ा फुल उफान पर था कि शिब्बू भैया ने टोक दिया-तुम भोपाल में रहकर बतोलेबाजी खूब सीख गये।पर अकल से आज भी पैदल हो। साइकिल पर भी नहीं आ पाये। मैंने बुरा नहीं माना। मैं छोटा हूं,वे बड़े हैं।बड़े की बात,बात होती है और छोटे की बात,बतोला। वे बोले-तुम,खां, बोलते भौत हो।राजनीति दिल का नहीं दिमाग का गेम है। तुम यह बताओ,हंसी-खुशी का मौका हो तो लोग पार्टी मांगते हैं,कोई दल मांगता हुआ दिखा कभी।किसी ने कहा कभी कि भाई प्रमोशन हुआ है मैं तो दल लूंगा तुमसे।

लोग यही कहते हैं कि इस पर तो पार्टी बनती है। डिक्शनरी वाले पार्टी के कितने भी मीनिंग बताते रहें पर इंडिया वाले पार्टी का एक ही मीनिंग समझते हैं। पार्टी सुनते ही खाने का भाव आता है और दल सुनते ही ताव आता है। दल में संघर्ष है,पार्टी में हर्ष है। पार्टी से लार टपकती है और दल से ललकार टपकती है। लोग किसी पार्टी में जायें खाने-पीने की नीयत से ही जाते हैं।

पार्टी कोई सी भी हो खाने-पीने के लिए ही होती है और दल दलने के लिए होता है।दल में केवल दाल है, पार्टी में माल है।दल में कोई नहीं आयेगा। कौन पड़ेगा झंझट में? लड़ाई भिड़ाई में कौन पड़ना चाहता है? लोग बिफरना नहीं चाहते,अफरना चाहते हैं।तुम मरवा दोगे दल बनवाकर। दल बदनाम हैं। दल निशाने पर रहते हैं। तुमने देखा नहीं,बात हमेशा दलबदल की होती है। पार्टी-बदल की नहीं होती। दलबदलू से लोग चिढ़ते हैं,पार्टीबदलू से नहीं चिढ़ते। पार्टी बनती भी है और मनती भी है। दल बनता है पर मनता नहीं है।पार्टी सुनकर लोग आयेंगे,दल से कतरायेंगे। दल नहीं,हम तो पार्टी बनायेंगे।

सामयिक

डॉ.रमेश ठाकुर

सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, भारत सरकार

भारत जी-7 की सदस्यता से महरूम क्यों?

जहां कुछेक करोड़ जनसंख्या वाले देश जी-7 के सदस्य हों और विश्व में सर्वाधिक आबादी वाला मुल्क गैर-सदस्य बनकर पहुंचता हो? भारत को सदस्य बनाने में अड़चन क्या हैं। रोड़ा कौन अटका रहा है और सदस्यहीनता का सूखा कब होगा खत्म? इसका इंतजार भारतवासी दशकों से कर रहे हैं। भारत के अलावा 7 और गैर-सदस्य देशों को बुलाया गया। क्या उन देशों को सिर्फ ताली बजवाने और फोटो सेशन करवाने के लिए आमंत्रित किया गया। शिखर के दौरान महत्वपूर्ण बैठकों, करार, समझौतों और वैश्विक स्तरीय मंथनों से भी दूर रखा। जबकि, इन सभी बैठकों में भारत प्रतिभाग की हैसियत रखता है। पिछले करीब दो दशकों के भारत के भरसक प्रयासों के बावजूद भी सदस्य नामित नहीं किया गया। जबकि, जी-7 में ऐसे सदस्य देश हैं जो भारतीय अर्थव्यवस्था के मुकाबले कहीं नहीं टिकते।

फ्रांस के 'एवियन लेस बैंस' में आयोजित हुए तीन दिनी 'जी-7 समिट' का 52वां संस्करण संपन्न हुआ। समिट में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी पहुंचे, लेकिन सदस्य देश बनकर नहीं, बल्कि मात्र एक मेहमान के तौर पर। वह भी फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के निमंत्रण पर। कितना हास्यास्पद लगता है ये सब। जहां कुछेक करोड़ जनसंख्या वाले देश जी-7 के सदस्य हों और विश्व में सर्वाधिक आबादी वाला मुल्क गैर-सदस्य बनकर पहुंचता हो? भारत को सदस्य बनाने में अड़चन क्या हैं। रोड़ा कौन अटका रहा है और सदस्यहीनता का सूखा कब होगा खत्म? इसका इंतजार भारतवासी दशकों से कर रहे हैं। भारत के अलावा 7 और गैर-सदस्य देशों को बुलाया गया। क्या उन देशों को सिर्फ ताली बजवाने और फोटो सेशन करवाने के लिए आमंत्रित किया गया। शिखर के दौरान महत्वपूर्ण बैठकों, करार, समझौतों और वैश्विक स्तरीय मंथनों से भी दूर रखा। जबकि, इन सभी बैठकों में भारत प्रतिभाग की हैसियत रखता है। पिछले करीब दो दशकों के भारत के भरसक प्रयासों के बावजूद भी सदस्य नामित नहीं किया गया। जबकि, जी-7 में ऐसे सदस्य देश हैं जो भारतीय अर्थव्यवस्था के मुकाबले कहीं नहीं टिकते।

सवाल उठता है। जी-7 समिट में भारत कब तक 'बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना बनता रहेगा'? जिस देश का लोकतंत्र सबसे विशाल हो, पुराना हो और जनसंख्या के लिहाज से करीब 140 से 145 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करता हो, उस देश को ऐसे वैश्विक मंचों से दूर रखना और महत्वपूर्ण बैठकों से अलग रखने का मतलब है, भारत की समूची जमात का अपमान करना। इसलिए बिना देर किए भारत को जी-7 में शामिल करना चाहिए। बार-बार भारत को जी-7 के आयोजन में मात्र मेहमान के तौर बुलाना किसी के गले नहीं उतरता। ऐसा एक बार से नहीं, पिछले 13 बार से लगातार किया जा रहा है। जी-7 2026 से पूर्व भी प्रधानमंत्री 7 मर्तबा गेस्ट के ही तौर पर भाग लेते रहे। पिछले 6 शिखर सम्मेलनों में पूर्ववर्ती भारतीय प्रधानमंत्री भी मेहमान बनकर पहुंचे। ये सिलसिला अब थमना चाहिए। भारतवासी लंबे समय से यही सोच रहे हैं कि काश वह वक्त कब आएगा जब हमारा देश भी 'जी-7 समिट' में पारंपरिक और अधिकारिक सदस्य बनकर आयोजन में आमद करेगा। भारत को 'स्थाई सदस्य' क्यों नहीं चुना जाता है ये सवाल दिनों दिन बड़ा होता जा रहा है।

जी-शिखर सम्मेलन कहने को तो दुनिया के 7 सबसे विकसित और ताकतवर लोकतांत्रिक देशों का एक अनौपचारिक मंच है जिसमें विश्व की अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और भू-राजनीतिक चुनौतियों पर मंथन और सुधारक निर्णय लेना होता है लेकिन जो देश इस बैठक में प्रतिभाग की मुकम्मल हैसियत रखते हैं उसे दूर रखते हैं आखिर क्यों? जी-7 समिट यानी 'ग्रुप ऑफ सेवन'। वह मुल्क जिनकी 'इकोनॉमी' लगातार ग्रोथ में हो और विश्व पटल पर तगड़ी हैसियत रखते हों? तो क्या संसार भारत को ऐसा नहीं मानता। क्या बढ़ती अर्थव्यवस्था में भारत शामिल नहीं है। बिल्कुल है। जबकि, तेजी से बढ़ती इकनॉमिक को लेकर भारत बीते कुछ वर्षों से विश्व में अपना डंका बजा रहा है। क्या भारत इटली, कनाडा और जर्मनी से पीछे हैं? उत्तर कतई नहीं? जब ये मध्यम देश इस महत्वपूर्ण समिट का हिस्सा बन सकते हैं तो भारत क्यों नहीं? जी-7 में अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जापान, इटली, कनाडा और जर्मनी शामिल हैं इसमें भारत को भी जोड़ा जाए, इसके लिए फ्रांस भी पक्षधर है। लेकिन एक देश की दादागिरी के चलते मुमकिन नहीं हो पा रहा। वो है अमेरिका। उसे इस बात की चिड़ है अगर भारत जी-7 में भी घुस गया, तो उसकी अहमियत कम हो जाएगी।

गौरतलब है साल-1975 में जब इस समिट की शुरूआत हुई, तब कुल 6 ही देश शामिल थे। 1976 में कनाडा के रूप में एक और मुल्क जुड़ा। उसके बाद जी-7 हुआ। वहीं वर्ष-1998 में रूस को शामिल करके सदस्य देशों की संख्या इजाफा करके आंकड़ा 8 तक पहुंचाया गया। तब, जी-8 हुआ। लेकिन रूस-यूक्रेन लड़ाई छिड़ने के बाद रूस को सस्पेंड कर दिया गया। तब, उसकी जगह भारत को शामिल किया जा सकता था। लेकिन अमेरिकी विरोध के चलते संभव नहीं हो सका। किसी भी वैश्विक मंच पर भारत की धमक बढ़े, उसे अमेरिका बर्दाश्त नहीं कर पा रहा है। इसके पीछे सीधा-सीधा कारण यही है, अमेरिका जानता है अगर भविष्य में उनकी अर्थव्यवस्था से कोई देश मुकाबला कर सकता है तो वह भारत ही होगा। इसलिए भारत को प्रत्येक मंचों पर कमतर आंकना, अमेरिका की आदत में शुमार हो गया है।

भारत की पुरजोर मांग है कि उसे जी-7 में शामिल किया जाए। ऐसा प्रस्ताव इस बार हुआ। भारत न सिर्फ सदस्य की हैसियत रखता है, बल्कि भविष्य में इस आयोजन की मेजबानी भी चाहता है। भारत सदैव संवाद, सहयोग और वैश्विक कल्याण की भावना का पक्षधर रहा है। ऐसे मंचों से भारत को दूर रखने का मतलब है, दुनिया को दूरदर्शी और मार्ग दर्शकीय विचारों से काटना। दुनिया जानती है कि नया भारत अब विश्व पटल पर विश्वास, समावेशिता और साक्षी प्रगति का सशक्त स्वर बनकर उभर चुका है। संसार में व्याप्त ना-ना प्रकार की वैश्विक चुनौतियां बिना भारत के दूर नहीं की जा सकतीं। जनकल्याण का स्वर्णिम अध्याय आज भारत लिख रहा है। जी-7 शिखर सम्मेलन का मुख्य मकसद संवाद, समाधान और विकास होता है और इस तीनों मंत्रों का अव्वल उपदेशक अब भारत है।

त्याग, स्वाभिमान और साहस की अमर गाथा

हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष

अमित राव पवार

युवा लेखक

18 जून भारतीय इतिहास की वह अमर तिथि है, जो केवल एक युद्ध का स्मरण नहीं कराती बल्कि त्याग,स्वाभिमान,साहस और मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण की गाथा सुनाती है। यह वह दिन है जब मेवाड़ की धरती पर एक ऐसा संघर्ष हुआ, जिसने इतिहास के पन्नों में वीरता की अमिट छाप छोड़ दी। वर्ष 1576 में 'हल्दी घाटी' के रूप में लड़ा गया यह युद्ध केवल तलवारों की टकराहट नहीं था, बल्कि स्वतंत्रता और अधीनता, स्वाभिमान और सत्ता के बीच का निर्णायक संघर्ष था। 'राजस्थान की अरावली पर्वतमालाओं के बीच स्थित हल्दीघाटी' आज भी उस ऐतिहासिक दिन की मौन साक्षी है। इसकी पीली मिट्टी मानो आज भी उन वीरों के रक्त से रंजित गौरवपूर्ण स्मृतियों को अपने भीतर संजोए हुए है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर आने वाली पीढ़ियों को स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का मूल्य समझाया।

एक ओर उस समय के सबसे शक्तिशाली शासकों में गिने जाने वाले मुगल सम्राट अकबर का विशाल साम्राज्य था,तो दूसरी ओर मेवाड़ के स्वाभिमानी शासक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जी। अकबर की शक्ति अपार थी,उसके पास विशाल सेना,संसाधन और साम्राज्य था। किंतु महाराणा प्रताप के पास वह था जो किसी भी साम्राज्य से अधिक शक्तिशाली होता है अपनी मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम और स्वतंत्रता की रक्षा का दृढ संकल्प। जब अधिकांश राजपूत रियासतें मुगल सत्ता के अधीन हो चुकी थीं,तब महाराणा प्रताप ने अपने स्वाभिमान को किसी भी कीमत पर न झुकाने का निर्णय लिया। उन्होंने वैभव,सुविधा और राजनीतिक लाभ के सभी प्रस्ताव ठुकरा दिए। उनके लिए राजसिंहासन से अधिक महत्वपूर्ण था मेवाड़ का गौरव और उसकी स्वतंत्रता। यही कारण है कि उनका संघर्ष केवल एक राजा का संघर्ष नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की रक्षा का राष्ट्रीय प्रतीक बन गया। हल्दीघाटी के युद्ध में संख्या बल निश्चित रूप से महाराणा प्रताप जी के पक्ष में नहीं था। उनके सामने कहीं अधिक विशाल और संगठित सेना थी,लेकिन इतिहास केवल सेना की संख्या नहीं देखता,वह उन हृदयों की शक्ति भी देखता है जो किसी महान उद्देश्य के लिए धड़कते हैं। मेवाड़ के रणबांकुरों ने युद्धभूमि में जिस साहस और शौर्य का परिचय दिया,वह आज भी प्रेरणा का स्रोत है। इस युद्ध की चर्चा चेतक के बिना अधूरी है। महाराणा प्रताप का प्रिय अश्व चेतक भारतीय इतिहास में निष्ठा और समर्पण का जीवंत प्रतीक बन चुका है। कहा जाता है कि युद्ध के दौरान गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद चेतक ने अपने स्वामी को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया अपने अंतिम क्षणों तक वह अपने कर्तव्य पर अडिग रहा। चेतक का बलिदान केवल एक घोड़े की मृत्यु नहीं था,बल्कि अपने स्वामी के प्रति समर्पण की ऐसी मिसाल था,जो सदियों बाद भी लोगों की आँखें नम कर देती है। हल्दीघाटी का युद्ध भले ही तत्कालीन सैन्य दृष्टि से निर्णायक विजय में परिवर्तित नहीं हुआ,लेकिन इसका नैतिक और ऐतिहासिक महत्व किसी भी विजय से कहीं अधिक बड़ा है। मुगल सेना युद्धभूमि पर नियंत्रण स्थापित कर सकी, किंतु वह महाराणा प्रताप के आत्मबल को पराजित नहीं कर सकी। वह उन्हें बंदी नहीं बना सकी,न ही उनके स्वाभिमान को झुका सकी। यही इस युद्ध की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। युद्ध के बाद भी महाराणा प्रताप ने हार स्वीकार नहीं की। उन्होंने जंगलों,पहाड़ों और दुर्गम घाटियों में रहकर संघर्ष जारी रखा। घोर अभावों का सामना किया, परिवार सहित कठिन जीवन व्यतीत किया, लेकिन अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। इतिहास में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं,जहाँ एक शासक ने राजमहलों की सुख-सुविधाओं को त्यागकर स्वतंत्रता की रक्षा के लिए वर्षों तक कठिन जीवन जिया हो।

आज जब हम हल्दीघाटी को स्मरण करते हैं, तो हमें यह समझना चाहिए कि इसकी सबसे बड़ी विरासत केवल युद्ध नहीं,बल्कि वह विचार है जिसके लिए यह युद्ध लड़ा गया था।यह हमें सिखाता है कि स्वतंत्रता का मूल्य केवल वही समझ सकता है जो उसके लिए संघर्ष करता है। यह हमें बताता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, यदि संकल्प दृढ़ हो तो संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता। वर्तमान समय में,जब भौतिक सफलता को ही अक्सर उपलब्धि का मानक मान लिया जाता है,तब महाराणा प्रताप का जीवन हमें चरित्र,स्वाभिमान और कर्तव्य की वास्तविक परिभाषा सिखाता है। वे बताते हैं कि मनुष्य की महानता उसकी संपत्ति या शक्ति में नहीं,बल्कि उसके सिद्धांतों के प्रति उसकी निष्ठा में होती है। हल्दीघाटी का युद्ध इसलिए अमर नहीं है कि वहाँ कितनी तलवारें चलीं या कितने सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। वह इसलिए अमर है क्योंकि वहाँ एक ऐसे योद्धा ने इतिहास रचा, जिसने संसार को यह संदेश दिया कि पराजय परिस्थितियों से नहीं,आत्मसमर्पण से होती है। जब तक आत्मसम्मान जीवित है,तब तक संघर्ष भी जीवित है और विजय की संभावना भी आज हल्दीघाटी की 450 वी पुण्य स्मृति पर राष्ट्र उन सभी वीरों को श्रद्धापूर्वक नमन करता है,जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। विशेष रूप से वीर शिरोमणि श्री महाराणा प्रताप जी का जीवन हमें सदैव प्रेरित करता रहेगा कि सत्ता की शक्ति से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है स्वाभिमान का संकल्प।

हल्दीघाटी की पीली मिट्टी आज भी मानो यही कहती है–'सिर कट सकता है,लेकिन स्वाभिमान कभी नहीं झुक सकता'।

गुरु अर्जन देव: ज्ञान, सेवा और शहादत की अमर ज्योति

शहीदी पर्व पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सनातन संस्कृति के गौरवपूर्ण इतिहास में सिख धर्म के पांचवें गुरु श्री गुरु अर्जन देव जी ऐसे महान गुरु हुए हैं, जिनके अनमोल विचार समस्त मानव जाति को सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने जीवन पर्यन्त अपने अनमोल विचारों के जरिये न केवल अज्ञानता में डूबे मानव को ज्ञान का प्रकाश दिखाया बल्कि देश-धर्म की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान भी कर दिया था। उनकी शहादत को स्मरण करते हुए सिख कैलेंडर के हिसाब से 18 जून को सिख धर्म के पहले शहीद गुरु अर्जन देव जी का शहीदी पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर उनसे जुड़े कुछ प्रसगों का उल्लेख करना प्रासंगिक है।

सभी धर्मों का सम्मान करने और सदैव लोगों की सेवा में ही लगे रहने के कारण गुरु अर्जन देव से मिलने और उनका आशीर्वाद लेने लिए विभिन्न धर्मों एवं आस्थाओं के लोग दूर-दूर से आते थे और उनसे ज्ञान एवं आनंद की अनुभूति पाते थे। ऐसे ही एक दिन उनके पास एक श्रद्धालु आकर कहने लगा कि गुरु जी ! आपकी संगति में ज्ञान प्राप्त करके मैं अब सत्य के मार्ग पर चलने लगा हूं और मैंने व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े करने पूरी तरह छोड़ दिए हैं, इसीलिए सभी लोग अब मुझे बहुत पसंद करने लगे हैं जबकि पहले कोई मेरी सूरत भी नहीं देखना चाहता था। यह सुनकर गुरू अर्जन देव मुस्कराने लगे और बोले कि यदि दुनिया में सभी प्राणियों को यह ज्ञान हो जाए तो मानव जीवन सफल व सुंदर हो जाए और पूरी दुनिया ही शांति एवं सुकून का केंद्र बन जाए।

श्रद्धालु ने स्वर्ण मुद्राओं से भरी अपनी थैली निकाली और गुरु अर्जन देव की ओर बढ़ाते हुए बोला कि गुरू जी, मैंने आपसे असीम ज्ञान प्राप्त किया है, जिसके लिए मैं आजीवन आपका ऋणी रहूंगा और इस ज्ञान के बदले मैं स्वेच्छा से आपको कुछ स्वणं मुद्राएं भेंट स्वरूप देना चाहता हूं, कृपया इन्हें स्वीकार करें। गुरु अर्जन देव ने स्वर्ण मुद्राएं लेने से इन्कार करते हुए कहा कि ज्ञान का कोई मोल नहीं क्योंकि वह अनमोल होता है और यहां ज्ञान निःस्वार्थ और निःशुल्क दिया जाता है। इस पर श्रद्धालु ने जिदपूर्वक कहा कि गुरूदेव ! यह आपसे मुझे मिले ज्ञान की कीमत नहीं है बल्कि मैं श्रद्धापूर्वक आपको यह उपहार देना चाहता हूं। इस पर गुरु अर्जन देव बोले कि यदि तुम कुछ देना ही चाहते हो तो तुमने जो ज्ञान मुझसे ग्रहण किया है, उसे दूसरों को निःस्वार्थ भाव से बांटो क्योंकि ज्ञान एक प्रसाद है और दुनिया की भलाई के लिए यह प्रसाद लोगों में बंटना ही चाहिए। यह सुनते ही श्रद्धालु गुरू अर्जन देव के चरणों में नतमस्तक होते हुए बोला कि आपका कथन सत्य है गुरूदेव ! इस ज्ञान के आगे भला इन स्वर्ण मुद्राओं का क्या मोल? आज से मैं आपका दिए ज्ञान का प्रसाद सभी में प्रेमपूर्वक बांटूंगा ताकि दुनिया और भी सुंदर हो जाए।

गुरू अर्जन देव मन की शांति को सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग मानते थे। दरअसल मन की शांति अनमोल है, जिसे कभी खरीदा नहीं जा सकता। अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग कार्य करके शांति मिलती है लेकिन दूसरों की सेवा करने के भाव से मन को सच्ची और असीम शांति मिलती है। हालांकि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग इस कदर व्यस्त हो गए हैं कि उनके मन की शांति गायब हो गई है। इस कारण लोगों में अवसाद जैसी बीमारियां भी बढ़ रही हैं। जब मन अशांत रहता है तो व्यक्ति का ध्यान भटकता है और मन का शांत न रहना असफलता का सबसे बड़ा कारण बनता है। जब कोई व्यक्ति अपने पास मौजूद संसाधनों से पूरी तरह संतुष्ट हो, जीवन में नकारात्मकता से कोसों दूर हो और चेहरे पर सदैव एक सुकून भरी मुस्कान हो, ऐसे व्यक्ति का मन पूर्ण शांति का अनुभव कर रहा होता है। वास्तव में आत्मसंतोष और संतुष्टि ही मन की शांति है। शास्त्रों में कहा गया है कि जो मनुष्य अपने मन पर नियंत्रण कर लेता है, उसका भाग्य बदल जाता है।

गुरू अर्जन देव के समय में बाला और कृष्णा नामक दो पंडित भ्रमण करते हुए जगह-जगह सुंदरकथा का पाठ कर लोगों को आत्मिक शांति प्रदान किया करते थे। कथा सुनने वाले लोग उनसे बहुत प्रभावित होते थे। एक दिन दोनों पंडितों ने गुरु अर्जन देव के दरबार में उपस्थित होकर उनसे प्रार्थना करते हुए कहा, महाराज ! हम तो लोगों को सुंदर कथा के माध्यम से आत्मिक शांति प्रदान करते हैं लेकिन हमारे मन में शांति नहीं है, इसलिए आप कोई ऐसा उपाय बताएं, जिससे हमारे मन को भी शांति मिले। गुरु अर्जुन देव ने उनकी समस्या का समाधान बताते हुए कहा कि यदि तुम मन की शांति चाहते हो तो कथा वाचन के अपने तरीके में बदलाव कर निष्काम भाव से कथा करो, तभी तुम्हें अपने मन में भी सच्ची शांति का अनुभव होगा। यदि कथा के जरिये केवल धन प्राप्त करने के लालच से ही कथा करोगे तो तुम्हारे मन को शांति कभी प्राप्त नहीं हो सकती बल्कि इससे मन का लालच बढ़ता ही जाएगा और मन पहले से भी ज्यादा चंचल और अशांत होगा। इसलिए कथा के माध्यम से जो तुम अन्य लोगों को समझाते हो, परमात्मा को अपने संग जानकर उस कथनी पर स्वयं भी अमल करो, तब मन को शांति अवश्य मिलेगी। आज के समय में गुरू अर्जन देव के ये उपदेश बहुत प्रासंगिक हैं। यह जरूरी है कि मन की शांति पाने के लिए प्रतिदिन कुछ पल शांति से बैठकर स्वयं से बातें करें और अपने भीतर की आवाज को सुनने का प्रयास करें। वैसे मन को असली शांति तभी मिलती है, जब दूसरों को कही जाने वाली बातों पर हम स्वयं भी अमल करते हैं।

दृष्टिकोण

मेघा राठी

लेखक साहित्यकार हैं।

भरोसे की कसौटी पर रिश्ते

आज सोशल मीडिया के युग में यह समस्या और भी बढ़ गई है। लोग अधूरी जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकाल लेते हैं। किसी की कही हुई बात को बिना जाँचे-परखे आगे बढ़ा देना बहुत आसान हो गया है। ऐसे समय में विवेक, धैर्य और सत्य की खोज पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हमें यह समझना होगा कि हर कहानी के कई पक्ष होते हैं और केवल एक पक्ष सुनकर निर्णय लेना न केवल अनुचित है, बल्कि कई बार निर्दोष लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायक भी हो सकता है।

रिश्तों की सबसे बड़ी नींव प्रेम नहीं बल्कि विश्वास होता है। प्रेम समय के साथ कम या अधिक हो सकता है, मतभेद भी हो सकते हैं, दूरियाँ भी आ सकती हैं लेकिन यदि विश्वास बना रहे तो रिश्ते टूटते नहीं हैं। वहीं जहाँ विश्वास नहीं होता, वहाँ वर्षों का साथ भी एक झटके में बिखर सकता है। आज के समय में यह स्थिति परिवारों, मित्रताओं और सामाजिक संबंधों में बहुत सामान्य होती जा रही है कि लोग किसी तीसरे व्यक्ति की कही बातों पर विश्वास कर लेते हैं, लेकिन उस व्यक्ति से सच जानने का प्रयास नहीं करते जिसके बारे में बातें की जा रही हैं।

कई बार जीवन में ऐसे लोग मिलते हैं जिन्हें आपकी ईमानदारी, स्पष्टवादिता या आपके द्वारा तय की गई सीमाएँ स्वीकार नहीं होतीं। वे चाहते हैं कि आप उनकी सुविधानुसार व्यवहार करें, उनकी अपेक्षाओं के अनुसार चलें और हर बात में उनकी सहमति को महत्व दें। जब ऐसा नहीं होता, तब वे असहज हो जाते हैं। कुछ लोग इस असहजता को समझदारी से संभालते हैं, जबकि कुछ लोग आपके प्रति नकारात्मक धारणाएँ बनाना शुरू कर देते हैं। वे आपके बारे में बातें करते हैं, आधे-अधूरे तथ्य प्रस्तुत करते हैं और धीरे-धीरे एक ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं जिसमें आप गलत और वे सही दिखाई दें।सबसे अधिक पीड़ा तब होती है जब ऐसे प्रयासों का प्रभाव उन लोगों पर भी पड़ने लगता है जिन्हें आप अपना मानते हैं। वे लोग जो वर्षों से आपके साथ रहे हैं, जिन्होंने आपके व्यवहार, आपके संघर्ष और आपके व्यक्तित्व को करीब से देखा हैयदि वे भी बिना किसी पुष्टि के दूसरों की बातों पर विश्वास कर लें, तो स्वाभाविक रूप से मन आहत होता है। लेकिन समय के साथ यह समझ भी विकसित होती है कि यह घटना केवल दूसरों का नहीं, बल्कि रिश्तों का भी परीक्षण है। किसी भी संबंध की वास्तविकता संकट के समय सामने आती है। जब आपके बारे में अच्छी बातें कही जा रही हों, तब साथ खड़ा होना बहुत आसान होता है। लेकिन जब आपके विरुद्ध बातें हो रही हों, तब कौन व्यक्ति आपके चरित्र पर भरोसा बनाए रखता है, यही उसकी वास्तविक निष्ठा को दर्शाता है। जो लोग आपके बारे में फैली हुई बातों को अंतिम सत्य मान लेते हैं, वे दरअसल आपके व्यक्तित्व से अधिक दूसरों की राय पर भरोसा कर रहे होते हैं। यह केवल आपके प्रति अविश्वास नहीं, बल्कि रिश्ते की कमजोरी का भी संकेत है।ऐसी परिस्थितियों में बहुत से लोग स्वयं को सही साबित करने की दौड़ में लग जाते हैं। वे हर व्यक्ति को सफाई देने का प्रयास करते हैं, बार-बार अपनी बात रखते हैं और चाहते हैं कि सभी लोग उनके पक्ष को समझें। लेकिन अनुभव सिखाता है कि हर व्यक्ति को समझाना संभव नहीं होता। कुछ लोग सच जानना चाहते हैं, जबकि कुछ लोग केवल वही सुनना चाहते हैं जो उनकी पहले से बनी हुई धारणाओं को सही साबित करे। ऐसे लोगों के सामने अनगिनत स्पष्टीकरण भी व्यर्थ हो जाते हैं।यहीं पर आत्मसम्मान और अहंकार के बीच का अंतर समझना आवश्यक है। आत्मसम्मान यह नहीं कहता कि आप कभी अपनी बात न रखें, बल्कि यह कहता है कि जहाँ आपकी बात सुनने की इच्छा ही न हो, वहाँ स्वयं को अपमानित करके बार-बार सफाई देने की आवश्यकता नहीं है। किसी रिश्ते को बचाने का प्रयास तभी सार्थक है जब दोनों पक्ष सच को जानने और समझने के लिए तैयार हों। यदि कोई व्यक्ति बिना आपकी बात सुने ही निर्णय सुना चुका है, तो उसके निर्णय का भार उठाना आपकी जिम्मेदारी नहीं है।

वास्तव में, जो लोग बिना आपसे सच्चाई जाने दूसरों की बातों को सच मान लेते हैं, उनका दूर हो जाना उतना बड़ा नुकसान नहीं होता जितना प्रारंभ में प्रतीत होता है। यदि वर्षों का साथ, साझा अनुभव और आपके व्यक्तित्व की समझ भी उनके भीतर विश्वास पैदा नहीं कर सकी, तो ऐसे संबंध पहले से ही कमजोर आधार पर खड़े थे। ऐसे लोगों के जाने से जीवन में खाली स्थान अवश्य बनता है, लेकिन उस स्थान पर आत्मसम्मान और मानसिक शांति के लिए जगह भी बनती है।

इसके विपरीत, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आपके जीवन की सबसे बड़ी पूँजी बन जाते हैं। वे अफवाहों के आधार पर राय नहीं बनाते। यदि उन्हें कोई बात सुनने को मिलती भी है, तो वे या तो उस पर विश्वास नहीं करते या फिर सीधे आपसे पूछते हैं। वे जानते हैं कि किसी व्यक्ति का मूल्यांकन दूसरों की कहानियों से नहीं, बल्कि अपने अनुभवों से किया जाना चाहिए। ऐसे लोग संख्या में भले कम हों, लेकिन जीवन में उनका महत्व असाधारण होता है। वे यह विश्वास दिलाते हैं कि सच्चे संबंध अभी भी अस्तित्व में हैं।

आज सोशल मीडिया के युग में यह समस्या और भी बढ़ गई है। लोग अधूरी जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकाल लेते हैं। किसी की कही हुई बात को बिना जाँचे-परखे आगे बढ़ा देना बहुत आसान हो गया है। ऐसे समय में विवेक, धैर्य और सत्य की खोज पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। हमें यह समझना होगा कि हर कहानी के कई पक्ष होते हैं और केवल एक पक्ष सुनकर निर्णय लेना न केवल अनुचित है, बल्कि कई बार निर्दोष लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायक भी हो सकता है।जीवन अंततः हमें एक महत्वपूर्ण सीख देता है-हर व्यक्ति को अपने साथ बनाए रखना आवश्यक नहीं है। कुछ लोग हमारे जीवन में लंबे समय तक रहते हैं, लेकिन समय आने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वे हमारे व्यक्तित्व से नहीं, बल्कि अपनी धारणाओं से जुड़े हुए थे। वहीं कुछ लोग ऐसे होते हैं जो कठिन परिस्थितियों में भी हमारा साथ नहीं छोड़ते। यही लोग हमारे वास्तविक शुभचिंतक होते हैं।इसलिए यदि कभी ऐसा हो कि कुछ लोग बिना आपसे सत्य जाने आपसे दूर हो जाएँ, तो उसे केवल हानि के रूप में मत देखिए। संभव है कि वह जीवन की एक स्वाभाविक छँटनी हो, जो आपको यह दिखा रही हो कि कौन लोग वास्तव में आपके साथ हैं और कौन केवल परिस्थितियों के साथ। अपने चरित्र, अपने सत्य और अपने आत्मसम्मान पर विश्वास रखिए। समय के पास एक अद्भुत क्षमता होती है-वह मुखौटे भी उतार देता है और सच्चे रिश्तों को भी पहचान दिला देता है। अंततः जीवन में सबसे महत्वपूर्ण यह नहीं है कि कितने लोग आपके बारे में अच्छा सोचते हैं, बल्कि यह है कि कितने लोग आपको सचमुच जानते हैं और फिर भी आप पर विश्वास करते हैं। वही लोग आपके अपने हैं, वही आपके संबंधों की वास्तविक पूँजी हैं, और वही किसी भी व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बिना नंबर प्लेट की गाड़ी से करेंगी मिलानपुर से बैतूल का सफर पूरा!

सम्मान देने के लिए नहीं लगाई जाती गाड़ी में नंबर प्लेट

परवेज खान, बैतूल। आमतौर पर किसी भी वाहन को सड़क पर चलने के लिए उस वाहन का रजिस्ट्रेशन और आरटीओ नंबर होना अनिवार्य है। इसके बिना सड़क पर वाहन नहीं चलाया जा सकता है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो कानूनी रूप से आपके खिलाफ चालानी कार्रवाई होगी या फिर जुर्माना भी हो सकता है, लेकिन 18 जून को 'आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण महासम्मेलन' में शिरकत करने आ रही देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू हेलीपैड वाले स्थल मिलानपुर से बैतूल के कार्यक्रम स्थल, लालबहादुर शास्त्री स्टेडियम तक बिना नंबर प्लेट की स्पेशल गाड़ी से यह सफर पूरा करेगी। इसके पीछे की वजह यह नहीं है कि सरकार और प्रशासन के पास रजिस्ट्रेशन और आरटीओ नंबर प्लेट वाली स्पेशल गाड़ी नहीं है, बल्कि यह एक प्रोटोकॉल के तहत होता है, और इसके पीछे की एक अहम वजह राष्ट्रपति का देश का प्रथम नागरिक होना और उनके सम्मान को बनाए रखना होता है। आपके जेहन में यह सवाल जरूर आ रहा होगा कि बिना नम्बर प्लेट की गाड़ी के साथ सफर से यह कैसा सम्मान है ? दरअसल यह व्यवस्था ब्रिटिश कालीन शासन काल से ही चली आ रही है। यह माना जाता है कि 'राजा कभी कोई गलत काम नहीं कर सकता...' बस यही सम्मान देने के लिए उनकी गाड़ी में नंबर प्लेट नहीं होती है, वे बिना नंबर प्लेट लगी हुई गाड़ियों से ही विभिन्न कार्यक्रमों के लिए सफर करती है। राष्ट्रपति की गाड़ी में नंबर प्लेट की जगह सोने की परत से बना हुआ अशोक स्तंभ होता है, जो नंबर प्लेट की जगह लगा होता है। राष्ट्रपति के काफिले में करीब 14 वाहन होते हैं। राष्ट्रपति के बिना नंबर प्लेट वाली गाड़ी से चलने की कुछ वजह सुरक्षा कारण भी बताए जाते है। इसके अलावा भी कुछ प्रमुख कारण है, जो राष्ट्रपति को सम्मान देने की वजह से ऐसे हैं। बहरहाल बैतूल आ रही राष्ट्रपति के लिए लालबहादुर शास्त्री स्टेडियम दुल्हन की तरह सज चुका है और कार्यक्रम की तैयारियां पूरी हो चुकी है। बैतूलवासियों की गुरुवार को राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू से मुलाकात भी होगी और वह उन्हें सुरक्षा व्यवस्था के साथ बिना नंबर प्लेट लगी गाड़ी से आते हुए भी देख सकेंगे।

ये है ऐतिहासिक मान्यता

यह परंपरा ब्रिटिश काल के सिद्धांत 'द किंग कैन डू नो रॉन्ग' (राजा कभी कोई गलत काम नहीं कर सकता) से प्रेरित है। इसके अनुसार, देश के प्रमुख पर कोई भी कानूनी मुकदमा या आम नियम लागू नहीं होते? सुरक्षा और विशिष्टताः भारत के राष्ट्रपति देश के प्रथम नागरिक और तीनों सेनाओं के सर्वोच्च कमांडर होते हैं। उन्हें देश में सर्वोच्च वरीयता प्राप्त होती है।

राष्ट्रीय गरिमा का प्रतीक

उनकी गाड़ी पर सामान्य नंबर प्लेट की जगह अशोक स्तंभ का होना, इस पद की गरिमा, संप्रभुता और राष्ट्र के सर्वोच्च नेतृत्व को दर्शाता है? राष्ट्रपतियों की गाड़ियों के अलावा, उपराष्ट्रपति और राज्यों के राज्यपालों की आधिकारिक गाड़ियों पर भी सामान्य नंबर प्लेट नहीं होती, और उन पर भी राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह का ही इस्तेमाल किया जाता है।

नंबर प्लेट की जगह लगा होता है ये...

भारत के राष्ट्रपति देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर होते हैं, इसलिए उनकी आधिकारिक गाड़ी पर कोई नंबर प्लेट नहीं होती। इसके बजाय, लाइसेंस नंबर वाली जगह पर सोने की परत से उकेरा हुआ राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह (अशोक स्तंभ) लगा होता है।

जिले के प्रभारी मंत्री पटेल आज बैतूल प्रवास पर, आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण' महासम्मेलन में होंगे शामिल

लोक स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा विभाग राज्यमंत्री एवं बैतूल जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल 18 जून को बैतूल प्रवास पर रहेंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रभारी मंत्री श्री पटेल प्रातः 10 बजे मिलानपुर टोल स्थित हेलीपैड पर राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की अगवानी करेंगे। तत्पश्चात राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू के मुख्य आतिथ्य में स्टेडियम में आयोजित 'आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण' महासम्मेलन में शामिल होंगे। इसके बाद प्रभारी मंत्री मिलानपुर टोल स्थित हेलीपैड पर राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू को विदाई देंगे। इसके बाद प्रभारी मंत्री दोपहर 2 बजे बैतूल से ओंकारेश्वर के लिए प्रस्थान करेंगे।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के मुख्य आतिथ्य में आज आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण महासम्मेलन

बैतूल। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के मुख्य आतिथ्य में आज 18 जून को लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में 'आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण' महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर राज्यपाल मंगूभाई पटेल, केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं विधायक बैतूल हेमंत खंडेलवाल प्रमुख रूप से उपस्थित रहेंगे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू का सुबह 10.50 बजे मिलानपुर टोल नाका हेलीपैड पर आगमन होगा। इस दौरान स्वागत के पश्चात राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू मिलानपुर टोल नाका हेलीपैड से कार्यक्रम स्थल स्टेडियम के लिए प्रस्थान करेगी। मुख्य कार्यक्रम स्थल पर आगमन के दौरान राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू द्वारा पौधरोपण कर ब्रह्मकुमारी के वरिष्ठ सदस्यों के साथ फोटो सेशन होगा। इसके पश्चात कार्यक्रम स्थल पर विभागों की प्रदर्शनी का अवलोकन होगा। मुख्य कार्यक्रम मंच पर राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के बाद द्वीप प्रज्वलन होगा। इस दौरान मंच पर उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा राष्ट्रपति का शॉल, स्मृति चिन्ह एवं पौधा भेंट कर स्वागत अभिनन्दन किया जाएगा। ब्रह्माकुमारी बैतूल की प्रभारी राजयोगिनी बी.के. मंजु दीदी द्वारा स्वागत उदबोधन के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति होगी।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु कलश एवं ध्वज द्वारा महासम्मेलन का शुभारंभ करेंगी। तत्पश्चात राजयोगिनी बी.के. शैलजा दीदी जोनल संचालक मध्यप्रदेश द्वारा उद्बोधन, केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके व माननीय राज्यपाल मंगूभाई पटेल द्वारा उद्बोधन होगा। इसके बाद राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू द्वारा उद्बोधन दिया जाएगा। राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के पश्चात राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू मिलानपुर टोल नाका हेलीपेड के लिए प्रस्थान करेगी। यहां से दोपहर 12:45 बजे राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ओंकारेश्वर के लिए प्रस्थान करेगी।

कमिश्नर, कलेक्टर एवं एसपी ने कार्यक्रम स्थल का किया निरीक्षण

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के मुख्य आतिथ्य में 18 जून को आयोजित होने वाले 'आध्यात्मिक जागृति से जनजातीय समाज का सशक्तिकरण' कार्यक्रम की तैयारियों का बुधवार को कमिश्नर श्री श्रीकांत बनोठ, कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे एवं पुलिस अधीक्षक श्री वीरेन्द्र जैन ने लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम पहुंचकर निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने कार्यक्रम की अंतिम तैयारियों एवं फाइनल रिहर्सल का अवलोकन किया। उन्होंने मंच व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, सुरक्षा प्रबंध, अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए कार्यक्रम के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन के लिए सभी व्यवस्थाएं समय पर पूर्ण कर ली गई है। कार्यक्रम स्थल के विभिन्न सेक्टरों में कार्यपालक मजिस्ट्रेट, पुलिस बल एवं अन्य अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

बालाजीपुरम में योग शिविर आरंभ, रविवार को मनेगा योग दिवस

जागरूकता रैली में बच्चे और महिलाएं भी बड़ी संख्या में शामिल

बैतूल। भारत के पांचवेधाम श्री रूकमणि बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में योग शिविर आज 16 जून से आरंभ हुआ। बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा के मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 19, 20 एवं 21 जून को आयोजित होने वाले योग शिविर से पहले बैतूल बाजार नगर में योग के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मंगलवार को एक योग जागरूकता रैली निकाली गई। रैली में बच्चों, महिलाओं, युवाओं, बुजुर्गों, सहित बड़ी संख्या में पतंजलि परिवार के योग साधको ने भाग लिया और योग को जन-जन तक पहुंचाने का संदेश दिया। रैली पवार चौक से बाजार चौक, चौकीपुरा, बड़ा शिव मंदिर, यूनियन बैंक से होकर गुजरी। पूरे मार्ग पर योग गीतों, नारों और जनसंपर्क अभियान के माध्यम से लोगों को 19, 20 एवं 21 जून को योग महोत्सव में बालाजीपुरम आने के लिए प्रेरित किया गया। महिलाओं ने घर-घर जाकर योग के लाभ बताएं और लोगों से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की अपील की। रैली के दौरान लोगों में काफी उत्साह देखा गया। रैली का आयोजन नियमित योग क्लास बैतूल बाजार के योगा ग्रुप के तत्वावधान में किया गया था। रैली की शुरुआत कार्मेल चिल्डर्न स्कूल से हुई एवं समापन बालाजीपुरम में भगवान बालाजी की महाआरती के साथ हुआ। इस अवसर पर बालाजीपुरम मंदिर की सहसंस्थापिका श्रीमती जयदेवी वर्मा, ट्रस्टी ऋषि वर्मा, बालाजी समिति संयोजक सुनील द्विवेदी, भारत स्वाभिमान न्यास के जिला प्रभारी सुनील कुबडे, सह प्रभारी राजकुमार गोहिते, युवा भारत के जिला प्रभारी हितेश पटेल,सह प्रभारी लोकेश वर्मा, किसान सेवा समिति के नवनीत वर्मा, जिला योग समिति के विनोद परिहार, रामदयाल बोरबन, तुलसीराम पांडे, सुनील मेसरे, शेर सिंह देवडे, अर्जुन सिंह चंदेल, कन्हैयालाल झपाटे, मिश्रीलाल डडोरे, राजेश कोडलें,मुकेश ठाकुर, श्रीमती तरुणा द्विवेदी, ज्योति देशमुख, सरिता दरवाई, भावना मोरे, रजनी पनकर, रितु नवांगे अंजलि पवार, विद्या पोटफोडे, सुनीता पवार, गीता पवार सहित बालाजी मंदिर संस्थान के नियमित श्रद्धालु मौजूद थे।

पूर्वाभ्यास में 610 ने लिया योग प्रशिक्षण

आयुष विभाग के नेतृत्व में विभिन्न स्थानों पर किया योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैतूल। जिला आयुष विभाग के मार्गदर्शन में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के पूर्वाभ्यास के अंतर्गत आज 17 जून को जिले के विभिन्न स्थानों पर व्यापक योग अभ्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह आयोजन जिला आयुष अधिकारी डॉ.योगेश चौकीकर के मार्गदर्शन में आयुष विभाग तथा विभिन्न गैर सरकारी एवं सामाजिक संगठनों के सहयोग से संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की।

मुलताई उपजेल में योग प्रशिक्षक रागिनी शिवहरे के द्वारा 95 बंदियों एवं लाभार्थियों को योगाभ्यास कराया गया। वहीं ताप्ती परिसर गायत्री मंदिर मुलताई में डॉ.ललित रतन चौधरी एवं डॉक्टर तरु लता आठनेरे के निर्देशन में 21 योग लाभार्थियों ने योग प्रशिक्षण प्राप्त किया। आमला स्थित गायत्री परिवार समिति में श्री अशोक रघुवंशी के मार्गदर्शन में 20 लोगों ने योगाभ्यास किया। इसी क्रम में पतंजलि योग समिति के प्रशिक्षक प्रीति साहू एवं कल्पना उईके के द्वारा द्वारका लॉन कालापाठा बैतूल में 43 लाभार्थियों को योग का अभ्यास कराया गया। इसके साथ ही चिचोली बाजार चौक में 12 लाभार्थियों ने योग प्रशिक्षण प्राप्त

किया। जिले के आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में भी व्यापक स्तर पर योग कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें कुल 419 लाभार्थियों ने योगाभ्यास का लाभ लिया। इस प्रकार पूरे जिले में आयोजित इन विविध योग सत्रों के माध्यम से कुल 610 लाभार्थियों ने योग प्रशिक्षण प्राप्त किया। घाट बिरोली से झनकलाल, साईखेड़ा से सुनील तथा ससुद्रा से योग प्रशिक्षक रागिनी की उपस्थिति में योग सत्र संपन्न हुआ। यह सत्र डॉ. ललित एवं डॉ. प्रगति के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

राष्ट्रपति के प्रस्तावित दौरे के चलते 18 जून को नहीं लगेगा कोठीबाजार का साप्ताहिक हाट

बैतूल। राष्ट्रपति के प्रस्तावित बैतूल आगमन को लेकर जिला प्रशासन ने सुरक्षा और यातायात व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि 18 जून (गुरुवार) को कोठी बाजार क्षेत्र में आयोजित होने वाला साप्ताहिक सब्जी एवं फुटकर बाजार नहीं लगाया जाएगा। जिला प्रशासन के अनुसार राष्ट्रपति के प्रस्तावित दौरे के मद्देनजर जिले में व्यापक सुरक्षा इंतजाम किए जा रहे हैं। इसी क्रम में कोठी बाजार क्षेत्र में लगने वाले साप्ताहिक सब्जी एवं फुटकर बाजार को एक दिन के लिए स्थगित रखने का निर्णय लिया गया है, ताकि प्रशासनिक व्यवस्थाओं के संचालन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। जिला प्रशासन एवं नगर पालिका परिषद, बैतूल ने सभी व्यापारियों, सब्जी विक्रेताओं, फुटकर कारोबारियों तथा आम नागरिकों से निर्धारित व्यवस्था का पालन करने और प्रशासन को आवश्यक सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया है। प्रशासन ने कहा है कि सुरक्षा और व्यवस्था बनाए रखने में नागरिकों की सहभागिता महत्वपूर्ण रहेगी। प्रशासन ने नागरिकों से यह भी अपील की है कि वे साप्ताहिक बाजार के स्थगन की सूचना को गंभीरता से लेते हुए अपनी आवश्यक खरीदारी एवं अन्य कार्यों की पूर्व योजना बना लें। इससे बाजार बंद रहने के दौरान किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

बैतूल में नागपुर के डॉ. ममतानी द्वारा आयुर्वेदिक रोग निदान शिविर

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल व आरोग्यधाम हेल्थकेयर सोसायटी नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. ममतानी दंपति द्वारा घर-घर में आयुर्वेद पहुंचाने के उद्देश्य से अलग-अलग स्थानों पर नियमित स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किए जाते है। इसके तहत बैतूल में 297वां आयुर्वेदिक रोग निदान शिविर 20 जून शनिवार सुबह 11 से शाम 4 बजे तक श्री झूलेलाल मंदिर मोहन कॉलोनी (सिंधी कॉलोनी), बैतूल में आयोजित किया गया है। जीकुमार आरोग्यधाम के संचालक डॉ. जी. एम. ममतानी व डॉ. अंजू ममतानी के अनुसार शिविर में संधिवात, लकवा, गठियावात, गाऊट, साइटिका, स्नायु पीडा, ऑस्टियोपोरोसिस, स्पांडिलाइटिस, स्लिपडिस्क, पी.आय.डी, फ्रोजन शोल्डर, मस्क्यूलर डिस्ट्रॉफी, पोलियो, एवैस्कुलर नेक्रोसिस कंपवात, ऑस्टियो आर्थराइटिस,

कमरदर्द, घुटने का दर्द, लिगामेंट इंज्युरी, डायबिटीज, हृदय रोग, हाइपरटेंशन, हाइपरकोलेस्ट्रोल, मिर्गी, माइग्रेन, साइनोसाइटिस, दमा, पुरानी सर्दी.खांसी, थायराइड विकार, वैरिकोज वेन्स, एसिडिटी, अल्सर, कब्ज, अल्सरेटिव कोलाइटिस, इरिटेबल बोवेल सिंड्रोम एलर्जी, उदर विकार, किडनी व प्रोस्टेट विकार, बवासीर, पथरी, सोरिएसिस, सफेद दाग, चर्मरोग, एक्जिमा, मानसिक विकार, नींद न आना, डिप्रेशन, एन्जाइटी, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, कष्टार्तव, बांझपन (संतान न होना), स्त्रीरोग, सौंदर्य समस्याएं, मुंहासे, झाइयां, मोटापा, दुबलापन, बालों का झडना, असमय बाल सफेद होना, सेक्स समस्याएं इत्यादि रोगों का निःशुल्क आयुर्वेदिक पंचकर्म चिकित्सा परामर्श दिया जाएगा। पंचायत के अध्यक्ष नरेन्द्र हिरानी व सचिव बंटी मोटवानी के अनुसार शिविर में आए हुए रुग्णों का चेकअप, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर इत्यादि जांच फ्री व स्वास्थ्य वाटिका पत्रिका निःशुल्क दी जाएगी। इच्छुक व्यक्ति 20 जून शनिवार सुबह 10 से शाम 4 बजे तक शिविर स्थल पर अपना पंजीकरण करा सकते है।

सोहागपुर थाने के अंतर्गत रानी पिपरिया में सचिन पुर्बिया की सिर में गोली मारकर हत्या से सनसनी, पुलिस अधीक्षक पहुंचे घटनास्थल

सोहागपुर। सोहागपुर पुलिस थाने के अंतर्गत रानी पिपरिया में शोभापुर के ढाबा संचालक सचिन पुर्बिया की सिर में गोली मारकर हत्या का सनसनीखेज मामला घटित हुआ है। सूचना मिलने पर समीपवर्ती ग्राम शोभापुर चौकी पुलिस एवं सोहागपुर नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी घटना स्थल पर पहुंचे। मामले की गंभीरता को देखते हुए नर्मदापुरम पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम श्री कृष्ण एस थोटा ने भी घटनास्थल स्थल का निरीक्षण किया।

इधर सोहागपुर में परिजनों ने घटना को लेकर कुछ देर के लिए जाम कर दिया। जाम कर रहे परिजनों को नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी ने कहा किआप निश्चित रहें। हत्या करने वाले अपराधी पुलिस गिरफ्त से बच नहीं पाएंगे। परिजनों ने आश्वस्त होकर जाम खोल दिया। पुलिस ने बताया कि राजू उर्फ राजकुमार पुर्विया पिता नारायण सिंह पुर्विया उम्र 34 साल निवासी भार्गव मोहल्ला शोभापुर ने सूचना दी कि सचिन पिता नारायण सिंह पुर्विया उम्र 28 साल निवासी भार्गव मोहल्ला शोभापुर की पाजरा रोड, ग्राम रानी पिपरिया की नहर की पुलिया के पास सिर में गोली मारकर हत्या कर दी गई है। पुलिस ने सूचनाकर्ता के आधार पर बताया कि मृतक

तीन भाई है। सचिन पुर्विया सबसे छोटा भाई है जो ग्राम महुआ में राजपूत ढाबा का संचालन करता है। मैं भी सचिन के साथ राजपूत ढाबा पर काम करता हूँ, दिनाँक 16.06.26 के रात करीब 08.30 बजे के लगभग सचिन मैं, पापा नारायण, मामा का लड़का आशीष पुर्विया ढाबा के कर्मचारी गोलू ठाकुर, राजेश, श्याम ठाकुर, छोटू ढाबा पर थे ।तभी ढाबे के सामने काले रंग की मोटर सायकिल से एक अज्ञात व्यक्ति सफेद रंग के गमछा से मुँह बांधकर आया ।सचिन ढाबे के बाहर कुर्सी लगाकर बैठा था और उठकर उस अज्ञात व्यक्ति के पास रोड किनारे गया। लगभग 20 सेकण्ड बात करने के बाद सचिन उस अज्ञात व्यक्ति के साथ मोटर सायकिल पर बैठकर पिपरिया तरफ चले गये। आधे घण्टे तक सचिन वापस नहीं आया तो मैं, पापा ने सचिन को फोन लगाया तो सचिन ने फोन नहीं उठाया ।, फिर मम्मी, निकित तिवारी सभी ने सचिन को फोन लगाया ।लेकिन सचिन ने किसी का फोन नहीं उठाया। बहुत रास्ता देखने के बाद रात करीब 03बजे के लगभग चौकी शोभापुर गये थे। चौकी शोभापुर से सचिन के मोबाईल की लोकेशन निकालने पर रानी पिपरिया की नहर के पास लोकेशन बतायी गई ।तो मैं, पापा, आशीष, रूपेश तलाश करते हुए ग्राम पांजरा रोड, रानी पिपरिया नहर के पास पहुँचे तो देखा की सचिन पुर्विया की लाश नहर के पुल के पास पड़ी हुई थी। सिर से खून निकला था ।तो रूपेश पुर्विया ने तुरंत शोभापुर पुलिस चौकी में सूचना दी है ।किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा मेरे छोटे भाई सचिन पुर्विया की गोली मारकर हत्या कर दी है। पुलिस गंभीरता से मामले की तहकीकात कर रही है। पुलिस ने धारा- 194 बीएनएसएस का मामला दर्ज कर लिया है।

राम रहीम रोटी बैंक बना आस्था का केंद्र

सोहागपुर। राम रहीम रोटी बैंक निरंतर आस्था का केंद्र बनता जा रहा है। यहां के निवासियों एवं आसपास के नागरिकों के लिए जन्मदिन, पुण्य तिथि, शादी की सालगिरह पर राम रहीम रोटी बैंक के माध्यम से बेसहारा लोगों को भोजन करवातें है। लेकिन राम रहीम रोटी बैंक की कीर्ति के कारण सोहागपुर में आने वाले अधिकारियों की भी पसंद बनता जा रहा है। इसी तारतम्य में सोहागपुर पुलिस थाना में पदस्थ एएसआई गणेश राय ने अपने जन्मदिन के अवसर पर जरूरतमंद बेघर बेसहारा नागरिकों एवं नर्मदा परिक्रमावासियों को भोजन सामग्री के साथ मिष्ठान आदि कराकर सराहनीय कार्य किया। राम रहीम रोटी बैंक के प्रतिनिधि एवं वरिष्ठ पार्षद जमील ख़ान ने श्री राय साहब का आभार व्यक्त किया है।

संक्षिप्त समाचार

भोजपुर विधायक पटवा सुल्तानपुर में आयोजित जनकल्याण शिविर में हुए शामिल

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले के सुल्तानपुर में भोजपुर विधायक श्री सुरेन्द्र पटवा के मुख्य आतिथ्य में जनकल्याण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के प्रारंभ में भोजपुर विधायक श्री सुरेन्द्र पटवा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के 12 स्वर्णिम वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जनकल्याण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। जिनके माध्यम से आमजन की समस्याओं के समाधान के साथ ही सरकार की जनहितैषी और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के अंत्योदय के संकल्प के अनुरूप सरकार की प्रत्येक योजना का लाभ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचे, इसी ध्येय और प्रतिबद्धता के साथ काम किया जा रहा है। विधायक श्री पटवा ने शिविर स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का निरीक्षण किया और जानकारी ली। साथ ही विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ भी वितरित किए। जनकल्याण शिविर में अनेक विभागों द्वारा स्टॉल लगाकर नागरिकों को विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई। साथ ही नागरिकों से आवेदन भी प्राप्त किए गए। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी उपस्थित रहे।

वृद्धाश्रम में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दुर्व्यवहार दिवस

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के मार्गदर्शन में जिले के स्थानीय वृद्धाश्रम परिसर में अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दुर्व्यवहार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में जिले से लगभग 100 से अधिक वरिष्ठ जनों ने सहभागिता की। उप संचालक सामाजिक न्याय श्री कमलेश सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वृद्धजनों पर हो रहे दुर्व्यवहार, अत्याचार, सोशल क्राइम, वित्तीय ठगी एवं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक शोषण की रोकथाम को लेकर जागरूकता फैलाना है। इस अवसर पर विधिक जानकारी देने हेतु अतिथि के रूप में पैरा लीगल वॉलिंटियर्स श्रीमती सुरेंद्र कौर उपस्थित रही। उन्होने वरिष्ठ जन अधिकार अधिनियम 2007 के नियम 2009 के अंतर्गत सभी भरण पोषण संबंधी जानकारी दी। इस अवसर पर पेंशनर संघ के अध्यक्ष श्री बी.आर. सगर एवं सार्थक सेवा आश्रय समिति के अध्यक्ष श्री बलराम काले उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि माह में एक बार माता- पिताओं का गेट टू गेदर होना अनिवार्य है। आप जिस भी सोसाइटी में रहते हैं, अपने वृद्धों को माह में एक बार आपस में मिलवाईये एवं असहाय वृद्ध जनों के लिए अनुकूल वातावरण बनायें। इसके अलावा कार्यक्रम में सामाजिक न्याय विभाग, जिले की स्वैच्छिक संस्थाएं, पेंशनर्स एसोसिएशन, वरिष्ठ नागरिक मंच एवं वृद्धाश्रम के कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

जनपद पंचायत नर्मदापुरम में जनकल्याण शिविर का द्वितीय दिवस सम्पन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। जनपद पंचायत नर्मदापुरम में आयोजित तीन दिवसीय जनकल्याण शिविर का द्वितीय दिवस सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर का आयोजन 12 जून, 13 जून एवं 15 जून 2026 को किया जा रहा है। शिविर के प्रथम एवं द्वितीय दिवस में विभिन्न विभागों द्वारा आमजन को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करते हुए हितग्राहीमूलक योजनाओं के आवेदन प्राप्त किए गए। ब्लॉक समन्वयक श्री रामकुमार गौर ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में विभिन्न विभागों से संबंधित हितग्राहीमूलक योजनाओं के आवेदन लगातार प्राप्त हो रहे हैं। अब तक कुल 1177 आवेदन पोर्टल पर दर्ज किए जा चुके हैं। प्राप्त आवेदनों के निराकरण एवं पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ प्रदान करने की कार्यवाही विभागीय स्तर पर की जा रही है। उन्होंने बताया कि जनकल्याण शिविर का अंतिम दिवस 15 जून 2026 को आयोजित किया जाएगा, जिसमें आने वाले आवेदनों का पंजीयन किया जाएगा तथा विभिन्न विभागों द्वारा जनहितकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान की जाएगी। शिविर में बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित होकर विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं एवं योजनाओं का लाभ लेने हेतु आवेदन प्रस्तुत कर रहे हैं।

मंत्री श्री उइके ने ग्राम रिंगढाना में आगजनी प्रभावित परिवारों से भेंट कर हरसंभव सहायता का दिया भरोसा

बैतूल (निप्र)। केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्य मंत्री एवं बैतूल सांसद श्री दुर्गादास उइके ने 15 जून को भैंसदेही विधानसभा क्षेत्र के ग्राम रिंगढाना का दौरा कर हाल ही में हुई आगजनी की घटना से प्रभावित परिवारों से भेंट की। इस दौरान उन्होंने प्रभावित परिवारों की समस्याओं को सुन उन्हें ढांढस बंधाया तथा आवश्यक राहत सामग्री प्रदान कर हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने कहा कि ग्राम रिंगढाना में हुई आगजनी की घटना अत्यंत दुःखद एवं हृदयविदारक है। किसी भी परिवार के लिए अपना घर, जीवनभर की मेहनत से अर्जित सामग्री और अपनी स्मृतियों को एक ही पल में नष्ट होते देखना अत्यंत पीड़ादायक होता है। उन्होंने कहा कि प्रभावित परिवारों की पीड़ा को कम तो नहीं किया जा सकता, लेकिन इस कठिन समय में उनके साथ खड़े होकर उन्हें संबल अवश्य प्रदान किया जा सकता है। केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने प्रभावित परिवारों को आश्वस्त करते हुए कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार जनहित और सेवा के भाव से कार्य कर रही है तथा संकट की इस घड़ी में हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों को राहत एवं पुनर्वास कार्यों में तत्परता बरतने तथा प्रभावित परिवारों को आवश्यक सहायता शीघ्र उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

लाड़ली बहना से आगे अब हर बहन बनेगी लखपति दीदी, आत्मनिर्भरता का नया अभियान

केन्द्रीय कृषि मंत्री चौहान सिलवानी और गैरतगंज में जनकल्याण शिविर में शामिल हुए

हितग्राहियों को सौंपे हितलाभ क्षेत्र में सड़कों, अस्पतालों और जनसुविधाओं के विकास को नई गति मिली है: केन्द्रीय मंत्री चौहान

रायसेन (निप्र)। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान रविवार को अपने संसदीय क्षेत्र विदिशा के सिलवानी और गैरतगंज के दौरे पर थे। केन्द्रीय मंत्री ने सिलवानी और गैरतगंज में आयोजित जन-कल्याण शिविर में शिरकत कर हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किए। उन्होंने सिलवानी में सिविल अस्पताल के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया और अस्पताल परिसर में पौधरोपण भी किया। इस दौरान कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, लोकतंत्र में नेता जनता का सेवक होता है और जनता ही सबसे बड़ी है। उन्होंने कहा कि जनता की सेवा ही मेरे लिए भगवान की पूजा है और जनप्रतिनिधि कोई अहसान नहीं करते, बल्कि अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं। उन्होंने कहा कि, ताली बजवाना ठीक है, स्वागत करना भी परंपरा का हिस्सा है, लेकिन बार-बार खड़े होकर अत्यधिक सम्मान दिलवाना मुझे उचित नहीं लगता। मैं तो हमेशा कहता हूँ कि हम सब एक परिवार हैं। सिलवानी, बेगमगंज, बमोरी, प्रतापगढ़ और पूरा क्षेत्र मेरा अपना परिवार है।

उन्होंने कहा कि, मैं मानता हूँ कि परंपराएँ अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं, लेकिन लोकतंत्र में सबसे ऊपर जनता होती है और जनता की सेवा करना ही हमारा सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि सिलवानी मेरा परिवार है और मैं यहां मेहमान नहीं बल्कि मामा बनकर अपने परिवार के बीच आया हूं। साथ ही केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सिलवानी में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लाभार्थी मोहन विश्वकर्मा के नवनिर्मित पक्के आवास का निरीक्षण किया और परिवार के साथ भोजन भी किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया में बढ़ा भारत का गौरव केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि, पिछले 12 वर्षों में भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया भारत की ओर सम्मान की दृष्टि से देख रही है

और विकसित, आत्मनिर्भर व समृद्ध भारत के निर्माण का सपना तेजी से साकार हो रहा है। उन्होंने कहा कि, हाल ही में विकसित देशों के सम्मेलन में छोटे किसानों के हितों की भारत द्वारा रखी गई बात को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया गया, जो देश के लिए गर्व का विषय है। प्रधानमंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एक गौरवशाली, वैभवशाली, शक्तिशाली, समृद्ध और सम्पन्न विकसित भारत का निर्माण हो रहा है।

जनकल्याण शिविरों के माध्यम से पारदर्शी तरीके से मिलेगा योजनाओं का लाभ केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर जनकल्याण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं ताकि अलग-अलग विभागों की योजनाओं का लाभ एक ही स्थान पर पारदर्शी तरीके से पात्र हितग्राहियों तक पहुंच सके। उन्होंने कहा कि मंच से सार्वजनिक रूप से हितलाभ वितरण करने से पारदर्शिता बनी रहती है और किसी प्रकार की गड़बड़ी की संभावना समाप्त हो जाती है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश भी दिए कि सभी प्राप्त आवेदनों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित किया जाए और पात्र हितग्राहियों को बिना विलंब लाभ दिया जाए। साथ ही उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत क्षेत्र के अनेक गांवों की सड़कों को स्वीकृति दी गई है और संबंधित ग्रामीणों को स्वीकृति पत्र भी प्रदान किए जाएंगे। सिलवानी अस्पताल में नए भवन के साथ चिकित्सकों की नियुक्ति सुनिश्चित की गई है ताकि बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो सकें। इसके अलावा विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास भी किया गया। उन्होंने कहा कि जनकल्याण शिविर में प्राप्त सभी आवेदनों का विभागवार परीक्षण कर पात्र हितग्राहियों को नियमानुसार शीघ्र लाभ उपलब्ध कराया जाएगा और जिला प्रशासन इस प्रक्रिया की सतत निगरानी करेगा।

हर गरीब को मिलेगा पक्का मकान, सर्वे में किसी पात्र का नाम नहीं कटेगा केन्द्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश को अब तक 13 लाख से भी अधिक आवास स्वीकृत किए गए हैं और प्रत्येक पात्र गरीब परिवार को पक्का मकान उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से आग्रह किया कि चल रहे फिजिकल वेरिफिकेशन के दौरान पूरी संवेदनशीलता बरती जाए और किसी वास्तविक पात्र गरीब का नाम गलती से भी सूची से बाहर न हो। उन्होंने कहा कि जिनके पास कच्चा मकान है, उन्हें हर हाल में पक्का घर उपलब्ध कराया जाएगा। वहीं केंद्रीय मंत्री ने कहा कि लाड़ली बहना योजना ने महिलाओं के जीवन में बड़ा बदलाव लाया है और भविष्य में इसकी राशि बढ़ाने का संकल्प भी कायम है। उन्होंने कहा कि अब सरकार का अगला लक्ष्य प्रदेश की हर महिला को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाकर ष्लखपति दीदीष् बनाना है।

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को प्रशिक्षण, बैंक ऋण और विभिन्न आर्थिक गतिविधियों से जोड़कर उनकी वार्षिक आय एक लाख रुपये से अधिक करने का अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि गांव-गांव और शहरों में अधिक से अधिक महिलाओं को समूहों से जोड़कर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे ताकि वे सम्मानजनक जीवन जी सकें। खेत बचाओ अभियान और इंटीग्रेटेड फार्मिंग से बढ़ेगी किसानों की आय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा कि बदलते समय में खेती को वैज्ञानिक और लाभकारी बनाना आवश्यक है।

ग्राम पंचायत तय करेगी विकास की प्राथमिकताएं

ग्राम पंचायत तय करेगी विकास की प्राथमिकताएं केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि वीबी जी राम जी योजना के तहत पंचायतों को हजारों करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध कराई जाएगी, लेकिन अब योजनाएं दिल्ली या भोपाल में नहीं बनेंगी। ग्राम सभा स्वयं तय करेगी कि गांव में तालाब बनना है, खेत सड़क बननी है, पंचायत भवन बनना है या अन्य विकास कार्य किए जाने हैं। उन्होंने कहा कि यदि पंचायतें योजनाबद्ध तरीके से इस राशि का उपयोग करें तो आने वाले वर्षों में गांवों की तस्वीर पूरी तरह बदल जाएगी। पानी बचाना समय की सबसे बड़ी जरूरत केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा कि, मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक इस साल अल नीनो के कारण सामान्य से कम बारिश होने की संभावना है, इसलिए जल संरक्षण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि 250 से अधिक गांवों तक नर्मदा का पानी पहुंचाने का कार्य तेजी से चल रहा है और क्षेत्र में नए बांधों व जल संरचनाओं की संभावनाओं पर भी सर्वे कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि जहां भी पानी रोका जा सकता है वहां जल संरक्षण के प्रयास किए जाएंगे क्योंकि खेतों तक पानी पहुंच जाए तो किसान अपनी मेहनत से चमत्कार कर सकता है। स्वास्थ्य सेवाओं के लिए जारी रहेगा सेवा अभियान केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों की समय पर पहचान के लिए नियमित स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि पूर्व में आयोजित शिविरों में बड़ी संख्या में मरीजों की बीमारी का समय रहते पता चला और उनका उपचार कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोई भी गरीब उपचार के अभाव में परेशान न हो, यह सरकार की प्राथमिकता है। साथ ही दिव्यांगजनों को बैटरी चालित ट्राइसाइकिल उपलब्ध कराकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का अभियान भी जारी रहेगा।

श्रवण एवं वाक् बाधित समुदाय के लिए राज्यव्यापी जागरूकता अभियान

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती तृप्ति शर्मा की उपस्थिति में श्रवण एवं वाक् बाधित समुदाय के सदस्यों के लिए 'अनुगूंज' शीर्षक से राज्यव्यापी जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का वर्चुअल शुभारंभ प्रातः 10:30 बजे मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति एवं मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के मुख्य संरक्षक द्वारा जबलपुर से किया गया। कार्यक्रम का सफल आयोजन नर्मदा बधिर संस्था के अध्यक्ष श्री दीपक राय के माध्यम से किया गया, जिसमें श्रवण एवं वाक् बाधित समुदाय के सदस्य, दिव्यांगजन के लिए कार्य करने वाली संस्थाओं के प्रतिनिधि, सांकेतिक भाषा दुभाषिए तथा अन्य हितधारकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में दिव्यांगजन आयुक्त श्री अजय खेमारिया ने मध्यप्रदेश शासन द्वारा दिव्यांगजन के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर उच्च न्यायालय जबलपुर के मुख्य न्यायाधीश श्री विवेक रूसिया द्वारा श्रवण एवं वाक् बाधित समुदाय के लिए विकसित 'संकेत वाणी' एप्लीकेशन की जानकारी दी गई। बताया गया कि इस एप्लीकेशन के माध्यम से समुदाय के सदस्य विधिक अधिकारों से संबंधित जानकारी सरलता एवं सहजता से प्राप्त कर सकेंगे।

जिला जेल में राज्यव्यापी 'योग सप्ताह अभियान' का शुभारंभ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में बंदियों एवं अधिकारियों ने किया योगाभ्यास, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का लिया संकल्प

विदिशा (निप्र)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार आयोजित राज्यव्यापी 'योग सप्ताह अभियान' का शुभारंभ सोमवार को जिला जेल विदिशा में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य योग के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना तथा बंदियों में सकारात्मक जीवन मूल्यों का विकास करना रहा है। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष श्री शेख सलीम, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री रमाकांत भारके, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री नितेन्द्र सिंह तोमर, जेल अधीक्षक श्री प्रियदर्शन श्रीवास्तव, जिला विधिक सहायता अधिकारी श्रीमती दिव्या भलावी, लीगल एड डिफेंस काउंसिल चीफ श्री सुरजीत सिंह सिकरवार, लीगल एड असिस्टेंट श्री विनोद कुशवाह, श्री अनिमेष तिवारी, जेल स्टॉफ तथा बड़ी संख्या में बंदीगण उपस्थित रहे। राज्यस्तरीय अभियान का शुभारंभ कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति, उच्च न्यायालय जबलपुर मध्यप्रदेश श्री विवेक रूसिया द्वारा केन्द्रीय जेल जबलपुर में किया गया। इस उद्घाटन कार्यक्रम का सीधा प्रसारण वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला जेल विदिशा में भी प्रदर्शित किया गया, जिससे उपस्थित

अधिकारी एवं बंदी राज्यस्तरीय आयोजन से जुड़ सके। उद्घाटन सत्र के उपरांत ऑनलाइन माध्यम से योगाभ्यास एवं प्राणायाम का विशेष सत्र आयोजित किया गया।

प्रशिक्षकों ने प्रतिभागियों को विभिन्न योगासन, प्राणायाम और ध्यान की विधियों का अभ्यास कराया। साथ ही योग के नियमित अभ्यास से होने वाले शारीरिक लाभों, मानसिक तनाव में कमी, एकाग्रता में वृद्धि तथा जीवन में सकारात्मक ऊर्जा के संचार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां भी साझा कीं। कार्यक्रम में शामिल अधिकारियों एवं बंदियों ने पूरे उत्साह और अनुशासन के साथ योग सत्र में भाग लिया तथा स्वस्थ एवं संतुलित जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया। योग सप्ताह अभियान के माध्यम से बंदियों को आत्म-सुधार, आत्म-अनुशासन तथा मानसिक सुदृढ़ता की दिशा में प्रेरित करने का प्रयास किया गया। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष श्री शेख सलीम ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि जेलों में योग कार्यक्रमों के नियमित आयोजन से बंदियों में आत्मविश्वास, आत्मानुशासन और सकारात्मक सोच का विकास होता है। योग मानसिक तनाव को कम करने के साथ-साथ जीवन में नई ऊर्जा और आशा का संचार करता है, जिससे व्यक्तित्व निर्माण एवं पुनर्वास की प्रक्रिया को भी बल मिलता है।

साप्ताहिक योग अभियान का हुआ शुभारंभ

सीहोर जिला जेल में योग कार्यक्रम आयोजित

सीहोर (निप्र)। उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार प्रदेश की जेलों में 15 जून से 21 जून तक साप्ताहिक योग अभियान चलाया जा रहा है। 15 जून को अभियान के शुभारंभ अवसर पर सीहोर जिला जेल में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष श्री संजीव कुमार अग्रवाल शामिल हुए। इस अवसर पर बंदियों को राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के लोगो युक्त टी-शर्ट का वितरण भी किया गया। प्रधान जिला न्यायाधीश ने जेल का निरीक्षण भी किया। कार्यक्रम में वसुंधरा वेलफेयर फाउंडेशन और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जरूरतमंद बंदियों को व्हीलचेयर, कान की मशीन, स्टिक, बेल्ट आदि सामग्री का वितरण भी किया गया। इस अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह, जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री जीशान खान, जेल अधीक्षक सुश्री प्रतिभा पटेल एवं बंदी गण उपस्थित रहें।

खरीफ सीजन में उन्नत खेती के लिए किसानों को दी गई है सलाह

सीहोर (निप्र)। किसानों को खरीफ सीजन के लिए कृषि विकास विभाग द्वारा कुछ तकनीकी सलाह दी जा रही है। इनमें मिट्टी की तैयारी, बीज की गुणवत्ता, सिंचाई प्रबंधन, खाद और उर्वरक का प्रयोग, खरपतवार नियंत्रण, कीट और रोग प्रबंधन तथा फसल विविधीकरण शामिल हैं।

किसानों को सलाह दी गई है कि अपने क्षेत्र की मिट्टी, जलवायु और सिंचाई सुविधा को ध्यान में रखते हुए फसल का चयन करें। फसल विविधीकरण करें, ताकि किसान विभिन्न जोखिमों से बच सकें। गहरी जुताई करें ताकि मिट्टी में हवा और पानी प्रवेश कर सके। मिट्टी की संरचना में सुधार के लिए जैविक खाद का उपयोग करें। इसके साथ ही उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का उपयोग करें जो अच्छी अंकुरण क्षमता वाले हों। बीजों को प्रमाणित करें और बीज की उचित मात्रा का उपयोग करें। किसान दलहनी-तिलहनी फसलों की बुआई मेड़ नाली पद्धति या ब्राडबैंड फरो पद्धति से करें, ताकि फसलों को जल भराव एवं सूखे से बचाया जा सके और अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। सिंचाई के लिए ड्रिप या स्प्रिंकलर तकनीक का उपयोग करें ताकि पानी की बचत हो सके। मौसम के अनुसार सिंचाई करें और मिट्टी की नमी को जांचते रहें। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के उप संचालक ने किसानों को सलाह दी है कि खाद और उर्वरक का प्रयोग सही मात्रा में करें। फसल की बुवाई के बाद खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई करें।

■ ऑन-स्पॉट निराकरण से खिले ग्रामीणों के चेहरे, 90 आवेदन समय-सीमा में सूचीबद्ध

नटेरन में तीन दिवसीय मुख्यमंत्री जनकल्याण शिविर संपन्न: 384 में से 294 आवेदन मौके पर ही हल

विदिशा (निप्र)। स्थानीय जनपद परिसर में आयोजित तीन दिवसीय ब्लॉक स्तरीय मुख्यमंत्री जनकल्याण शिविर का भव्य और सफल शुभारंभ हुआ। शिविर का मुख्य उद्देश्य दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले हितग्राहियों की समस्याओं और शिकायतों का मौके पर ही त्वरित एवं प्रभावी निराकरण करना रहा, जिसमें प्रशासन को बड़ी सफलता मिली है। शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को सीधे जमीनी स्तर पर आम जनो तक पहुँचाने के उद्देश्य से आयोजित इस त्रि-दिवसीय शिविर को कुशल प्रबंधन के लिए तीन क्लस्टर में आयोजित किया गया था। ग्राम पंचायतों के सचिवों और रोजगार सहायकों के माध्यम से क्लस्टर अनुसार पात्र हितग्राहियों को चिह्नित कर शिविर का लाभ दिलाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई थी। शिविर के दौरान कुल 384 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से अधिकारियों की सक्रियता के चलते 294 आवेदनों का मौके पर ही (ऑन-स्पॉट) निराकरण कर हितग्राहियों को त्वरित राहत प्रदान की गई है। वहीं, जिन 90 शिकायतों का किसी तकनीकी या अन्य कारणवश मौके पर निराकरण नहीं हो पाया, उन्हें अधिकारियों द्वारा समय-सीमा के भीतर निराकृत करने हेतु सूचीबद्ध किया गया है।

जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों की रही गरिमामयी उपस्थिति: शिविर के दौरान क्षेत्र के जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी पूरी तरह मुस्तैद नजर आए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक श्री सूर्य प्रकाश मीना उपस्थित रहे। इसके साथ ही अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री अजय प्रताप सिंह पटेल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री जीतेंद्र जैन, जनपद पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री यशपाल सिंह रघुवंशी एवं उपाध्यक्ष श्री नीलेश धाकड़, तहसीलदार श्री आनंद कुमार जैन सहित विभिन्न विभागों के जिला और ब्लॉक स्तरीय अधिकारी-कर्मचारी विशेष रूप से मौजूद रहे।

विधायक ने हितग्राहियों को सौंपे अधिकार पत्र और सामग्रियां: शिविर के दौरान मुख्य अतिथि और क्षेत्रीय विधायक श्री सूर्य प्रकाश मीना ने कई पात्र हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं के तहत स्वीकृत पत्र और सामग्रियां मौके पर ही वितरित कीं , जिनमें मुख्य रूप से स्वाइल हेल्थ कार्ड (मृदा स्वास्थ्य कार्ड) एवं मृदा परीक्षण कार्ड, सीमांकन प्रमाणपत्र, शिशु पोषण किट जाति प्रमाणपत्र शामिल हैं।

मौके पर ही सरकारी लाभ, प्रमाणपत्र और पोषण किट पाकर दूर-दराज से आए ग्रामीणों के चेहरे खिल उठे और उन्होंने शासन व प्रशासन के इस सराहनीय प्रयास के प्रति आभार व्यक्त किया।

अलग-अलग स्टालों पर स्वास्थ्य परीक्षण, आयुष्मान और आधार कार्ड की दी सुविधा

शिविर परिसर में सभी शासकीय विभागों द्वारा अपने-अलग स्टाल लगाए गए थे, जहाँ अधिकारियों ने आवेदकों की समस्याओं को बेहद संजीदगी से सुना। शिविर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा नि :शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर लगाया गया। आमजन की सुविधा के लिए आयुष्मान कार्ड, आधार कार्ड एवं समग्र आईडी से जुड़ी सेवाओं के लिए विशेष काउंटर स्थापित किए गए, जहाँ बड़ी संख्या में लोगों के अटके हुए कार्य पूरे हुए।

संबोधन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन के महिदपुर में विकास कार्यों के भूमि-पूजन एवं लोकार्पण समारोह को संबोधित किया।

विजयदत्त श्रीधर को जबलपुर विवि मानद डी.लिट् प्रदान करेगा

भोपाल। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर 21 जून को अपने दीक्षांत समारोह में श्री विजयदत्त श्रीधर को डी. लिट. की मानद उपाधि देने जा रहा है। श्रीधरजी ने भोपाल में माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान की स्थापना की है। साथ ही अनेक पुस्तकों के साथ 'भारतीय पत्रकारिता कोश' (दो खण्ड) और 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' (तीन खण्ड) जैसे शोध प्रबंधात्मक ग्रंथों की रचना की है। विजयदत्त श्रीधर को पत्रकारिता और साहित्य में योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। अब रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर की अकादमिक समितियों ने उन्हें डी.लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित करने का निर्णय लिया है। यह उपाधि श्रीधरजी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू प्रदान करेंगी। आयोजन में मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार भी उपस्थित रहेंगे। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर राजेश कुमार वर्मा आयोजन के सूत्रधार होंगे।

आगरा में 2 कारों की टक्कर, 3 की मौत

टायर फटने से बेकाबू कार डिवाइडर तोड़कर दूसरे लेन में घुसी, 11 घायल

आगरा (नप्र)। आगरा में दो कारों की आमने-सामने की टक्कर में 3 लोगों की मौत हो गई, जबकि 11 लोग घायल हो गए। पुलिस के अनुसार, एक कार में बीएससी के 7 छात्र सवार थे, जबकि दूसरी कार में 8 लोग सवार थे जोकि हरिद्वार से लौट रहे थे।

बुधवार सुबह यह हादसा आगरा-ग्वालियर हाईवे पर सैंया थाना क्षेत्र में कुणाल कॉलेज के पास हुआ। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि छात्रों की अर्टिगा कार का टायर फटने से अनियंत्रित हो गई। बेकाबू कार डिवाइडर तोड़ते हुए दूसरी लेन में पहुंच गई और सामने से आ रही नेक्सन कार से उसकी जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि नेक्सन कार पलट गई।

सूचना मिलते ही पुलिस और स्थानीय ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। उन्होंने घायलों को कारों से बाहर निकालकर इलाज के लिए एसएन मेडिकल कॉलेज भेजा। मृतकों की पहचान धौलपुर जिले के ताशियो गांव निवासी रिंकू शर्मा (पुत्र राकेश शर्मा), मध्य प्रदेश के दतिया निवासी विवेक तिवारी (पुत्र हरिमोहन तिवारी) और मीना श्रीवास्तव (पत्नी अशोक श्रीवास्तव) के रूप में हुई है।

पुलिस के मुताबिक, धौलपुर से अर्टिगा कार में सवार 7 छात्र बीएससी की परीक्षा देने आगरा आ रहे थे। कार में रिंकू शर्मा, अभिषेक पुत्र रघुराज, जितेंद्र पुत्र राजवीर सिंह, राहुल पुत्र वासुदेव, मनमोहन पुत्र रघुराज सिंह समेत अन्य छात्र सवार थे। घायल अभिषेक शर्मा ने बताया कि बुधवार सुबह सभी छात्र परीक्षा देने के लिए घर से निकले थे। रिंकू शर्मा कार चला रहे थे। कुणाल कॉलेज के पास पहुंचते ही कार का दाहिनी ओर का टायर फट गया, जिससे चालक वाहन पर नियंत्रण खो बैठा।कार की रफ्तार अधिक होने के कारण वह डिवाइडर तोड़कर दूसरी लेन में पहुंच गई और सामने से आ रही नेक्सन कार से टकरा गई। हादसे में चालक रिंकू शर्मा की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि अन्य छात्र घायल हो गए।

हरिद्वार से लौट रहा था दूसरी कार में सवार परिवार

दूसरी ओर, नेक्सन कार में मध्य प्रदेश के दतिया निवासी 8 लोग सवार थे। पुलिस के अनुसार, सभी लोग गंगा स्नान और दर्शन के लिए हरिद्वार गए थे। दर्शन के बाद वे अपने घर लौट रहे थे, तभी आगरा-ग्वालियर हाईवे पर उनकी कार हादसे का शिकार हो गई।नेक्सन कार में विवेक तिवारी, उर्मिला तिवारी, मीना श्रीवास्तव, राखी वाजपेयी, मनी वाजपेयी, राघव, शिव और सुमित सवार थे। हादसे में विवेक तिवारी और मीना श्रीवास्तव की मौत हो गई, जबकि अन्य लोग घायल हो गए।

भोपाल जा रहे परिवार की स्कॉर्पियो पलटी, बुआ-भतीजे की मौत

इंदौर से नई कार लेने आ रहे थे देवास के पास सोनकच्छ में हादसा, 10 घायल

देवास (नप्र)। नई कार खरीदने की खुशी में इंदौर से भोपाल जा रहा एक परिवार रास्ते में भीषण हादसे का शिकार हो गया। देवास जिले के सोनकच्छ के पास बुधवार दोपहर स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में बुआ-भतीजे की मौत हो गई, जबकि डेढ़ साल की बच्ची समेत 10 लोग घायल हो गए।

जानकारी के अनुसार, इंदौर निवासी गर्ग और अग्रवाल परिवार के 12 सदस्य स्कॉर्पियो से भोपाल जा रहे थे। परिवार को नई कार खरीदनी थी। बताया जा रहा है कि जिस मॉडल की कार उन्हें चाहिए थी, वह इंदौर में उपलब्ध नहीं थी, इसलिए सभी लोग भोपाल के लिए निकले थे। रास्ते में सोनकच्छ के पास वाहन अनियंत्रित होकर पलट गया।

लोगों ने घायलों को बाहर निकाला- हादसे में इंदौर निवासी मयूरेश गर्ग (38) पुत्र संतोष गर्ग और उनकी बुआ संगीता अग्रवाल (51) पत्नी सुनील अग्रवाल की मौके पर मौत हो गई। दोनों आपस में बुआ-भतीजे थे। घटना के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। राहगीरों और स्थानीय लोगों ने पलटी हुई स्कॉर्पियो से घायलों को बाहर निकाला। सूचना मिलने पर पुलिस और एंबुलेंस मौके पर पहुंची।सभी घायलों को तत्काल सोनकच्छ अस्पताल ले जाया गया।

मानसून सत्र में विधानसभा में आएगा यूसीसी का विधेयक

सीएम बोले- इसी सत्र में पारित होगा बिल, दिवाली तक पूरी तरह से लागू करने की तैयारी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश की डॉ. मोहन यादव सरकार आगामी मानसून सत्र में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) प्रस्ताव लाने की पूरी तैयारी में है। खुद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस बात की पुष्टि करते हुए बड़ा बयान दिया है। सीएम ने कहा कि इसी मानसून सत्र में यूसीसी का प्रस्ताव विधानसभा में लाया जा रहा है और महाकाल चाहेंगे तो इसी सत्र में यह प्रस्ताव पारित भी हो जाएगा। उत्तराखंड और गुजरात के बाद अब मध्य प्रदेश भी इस कानून को लागू करने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहा है। बता दें कि मानसून सत्र 20 जुलाई से शुरू हो रहा है। विधानसभा में यूसीसी प्रस्ताव लाने को लेकर भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने भी सरकार के इस कदम का समर्थन किया है। उन्होंने अपने बयान में कहा कि यह पूरे हिंदुस्तान की डिमांड है और यह कानून देश की सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है। इसके साथ ही विधायक रामेश्वर शर्मा ने जोर देकर कहा कि इस कानून के लागू होने से जनसंख्या पर भी नियंत्रण लगेगा। उन्होंने आगे कहा कि देश के कई राज्यों ने इसे लागू करने की पहल की है और अब मध्य प्रदेश में भी इसकी पूरी तैयारी कर ली गई है।

राज्य का दौरा कर लोगों से ली राय

कमेटी ने राज्य के विभिन्न हिस्सों का दौरा कर समाज के सभी वर्गों से राय ली और आम नागरिकों के सुझाव ऑनलाइन दर्ज करने के लिए एक आधिकारिक वेब पोर्टल भी शुरू किया था। जनता और विभिन्न संगठनों से यूसीसी को लेकर प्रस्ताव और सुझाव लेने की अवधि 15 मई से शुरू होकर 15 जून तक तय की गई थी। हालांकि, अभी भी पब्लिक को एसएसएम भेजकर ऑनलाइन सुझाव मंगाए जा रहे हैं कमेटी को गठन के बाद 60 दिनों के भीतर अपनी रिपोर्ट और ड्राफ्ट बिल सरकार को सौंपने का निर्देश दिया गया था। जनता के सुझावों और अलग-अलग वर्गों से संवाद के बाद अब इस ड्राफ्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है। सरकार का लक्ष्य है कि आगामी मानसून सत्र में इसे विधानसभा पटल पर रखकर पारित कराया जाए और इस साल दिवाली तक मध्य प्रदेश में समान नागरिक संहिता को पूरी तरह लागू कर दिया जाए। विधानसभा के मानसून सत्र में यूसीसी बिल लाए जाने वाले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के बयान पर कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने कहा यदि बाबा महाकाल की कृपा का वो जिक्र कर रहे हैं, तो महाकाल की कृपा लिव इन रिलेशनशिप के लिए तो नहीं होगी। मैं उम्मीद करता हूं कि लिव इन रिलेशनशिप को कोई मान्यता नहीं देगा। कोई नहीं चाहेगा कि लिव इन रिलेशन शिप को बढ़ावा दिया जाए और यह कोई शिष्टाचार का तरीका नहीं है इसका सभी लोग विरोध करेंगे। और यह यूसीसी तो बचा ही नहीं है जब आप एक ट्रायबल कम्युनिटी को अलग कर रहे हैं तो अब यूसीसी कहां बचा?

कुआं धंसा, मां-पत्नी 25 फीट की गहराई में समाईं

राजगढ़ (नप्र)। मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के खिलचीपुर क्षेत्र के बामन गांव में बुधवार को निर्माणाधीन कुआं अचानक धंस गया। हादसे में कांग्रेस नेता और जनपद सदस्य की मां और पत्नी मिट्टी में दब गईं। घटना दोपहर करीब 1 बजे की है। प्रशासन की टीम 3 जेसीबी से मिट्टी हटा रही है। जानकारी के अनुसार, हादसे के वक्त सास रूपा (60) और बहू पिंकी (30) वहीं थीं और कुएं में समा गईं। ऊपर से मिट्टी गिरने से कुआं लगभग पूरी तरह भर गया। रूपा जनपद सदस्य की मां और पिंकी उनकी पत्नी हैं। 50 अधिक लोगों की टीम रेस्क्यू कर रही है।

50 फीट तक जमीन धंसी, 3 जेसीबी से रेस्क्यू

कैसे हुआ हादसा?

कांग्रेस नेता और जनपद सदस्य मुकेश कोट (डांगी) अपने खेत में पुराने कुएं का पुनर्निर्माण करा रहे थे। खुदाई के बाद कुएं की बाउंड्री आरसीसी से बनाई गई थी। मंगलवार को निर्माण कार्य पूरा हो गया था। आरसीसी को मजबूत करने के लिए कुएं के चारों ओर की जमीन गीली की गई थी। बाउंड्री में लोहे की सेंट्रिंग लगी थी।

कुएं को देखने पहुंचीं मां और पत्नी- मुकेश कोट की मां रूपा बाई और पत्नी पिंकी बाई खेत में निर्माणाधीन कुएं को देखने पहुंचीं। कुएं के पास आरसीसी कार्य की बची गिट्टी रखी थी। गिट्टी बिखरी देखकर रूपा बाई उसे व्यवस्थित करने लगीं। उन्हें देखकर पिंकी बाई भी मदद के लिए आगे आईं। इसी दौरान कुएं के आसपास की मिट्टी अचानक धंस गई। दोनों महिलाएं संभल नहीं सकीं और धंसती मिट्टी के साथ करीब 25 फीट गहरे कुएं में जा गिरीं। कुछ ही पलों में कुआं और आसपास का हिस्सा मिट्टी से भर गया।

नर्मदा स्नान के लिए निकले किसान को कंटेनर ने रौंदा

10 साल बाद घर आई थीं खुशियां, ढाई महीने पहले हुए थे जुड़वा बेटे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के सूखीसेवनिया थाना क्षेत्र में भोपाल-इंदौर बाइपास पर हुए सड़क हादसे में एक किसान की मौत हो गई। कंटेनर की टक्कर से बाइक सवार किसान ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। हादसा उस समय हुआ जब वह सोमवती अमावस्या पर नर्मदा स्नान के लिए होशंगाबाद (नर्मदापुरम) जा रहे थे।

सूखीसेवनिया पुलिस के मुताबिक, मृतक की पहचान हरीनारायण पिता गंगाराम गुर्जर (33) निवासी देवबरखेड़ी, बैरसिया रोड के रूप में हुई है। वह खेती करते थे। मंगलवार रात वह अपनी पल्सर बाइक से अकेले होशंगाबाद के लिए निकले थे। भोपाल-इंदौर बाइपास पर कंटेनर चालक ने ओवरटेक करने के दौरान बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में हरीनारायण गंभीर रूप से घायल हो गए और मौके पर ही उनकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। बुधवार को पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर कंटेनर चालक की तलाश और हादसे की जांच शुरू कर दी है।

ढाई महीने पहले हुए जुड़वा बेटे

परिजनों के अनुसार हरीनारायण की शादी करीब 10 साल पहले हुई थी। लंबे इंतजार और मन्नतों के बाद करीब ढाई महीने पहले उनके घर जुड़वा बेटों का जन्म हुआ था। बच्चों के आने से परिवार में खुशी का माहौल था, लेकिन हादसे ने परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया।

अकेले बाइक से निकले थे नर्मदा स्नान के लिए- परिजनों ने बताया कि हरीनारायण नर्मदा स्नान के लिए होशंगाबाद जा रहे थे। वह अकेले ही बाइक लेकर निकले थे। रास्ते में हुए हादसे की खबर मिलने के बाद परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस अब मामले की जांच कर रही है।

बरगी क्रूज हादसे के बाद केंद्र सरकार सख्त

मुख्य सचिव को भेजी चिट्ठी में कहा, इनलैंड वाटर ट्रांसपोर्ट में नाव सुरक्षा नियमों का पालन कराएं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के जबलपुर स्थित बरगी डैम में हुए क्रूज हादसे और देश के विभिन्न हिस्सों में हाल में हुई नाव दुर्घटनाओं के बाद केंद्र सरकार ने अंतर्देशीय जल परिवहन की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर चिंता जताई है। यात्रियों और पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) ने राज्यों को सुरक्षा नियमों का सख्ती से पालन कराने के निर्देश दिए हैं।

आईडब्ल्यूएआई के अध्यक्ष सुनील पालीवाल ने मध्यप्रदेश के मुख्य सचिव अनुराग जैन को पत्र लिखकर अंतर्देशीय पोत अधिनियम-2021 और उससे जुड़े नियमों के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता बताई है। पत्र में कहा गया है कि उत्तर प्रदेश के वृंदावन में यमुना नदी और मध्यप्रदेश के बरगी डैम में हुई हालिया नाव दुर्घटनाओं में लोगों की मौत हुई है, जिससे जल परिवहन और पर्यटन स्थलों पर संचालित नौकाओं की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हुए हैं।

सुरक्षा नियमों के पालन पर जोर- आईडब्ल्यूएआई ने पत्र में स्पष्ट किया है कि अंतर्देशीय पोत अधिनियम-2021 के तहत बनाए गए नियमों का पालन अनिवार्य है। इनमें नावों की डिजाइन और निर्माण मानक, नियमित सर्वेक्षण और प्रमाणन, अनिवार्य पंजीयन, सुरक्षित नौवहन, संचार व्यवस्था, बीमा, यात्री सुरक्षा, लाइफ जैकेट और अन्य जीवनरक्षक उपकरणों की उपलब्धता, अग्निशमन व्यवस्था तथा प्रशिक्षित चालक दल की नियुक्ति जैसे प्रावधान शामिल हैं।

राज्यों की भूमिका अहम- प्राधिकरण ने कहा है कि नियमों का निर्माण केंद्र सरकार करती है, लेकिन उनका पालन और प्रवर्तन राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है। कई राज्यों में अभी तक आवश्यक अधिसूचनाएं जारी नहीं हुई हैं, जिससे नियमों का प्रभावी क्रियान्वयन प्रभावित हो रहा है। आईडब्ल्यूएआई ने राज्यों से नामित अधिकारियों की नियुक्ति और लंबित अधिसूचनाएं जल्द जारी करने को कहा है।

मध्यप्रदेश में बढ़ सकती है निगरानी- आईडब्ल्यूएआई के पत्र के बाद मध्यप्रदेश में बरगी डैम, तवा जलाशय, गांधी सागर, बाणसागर और अन्य जल पर्यटन स्थलों पर संचालित नावों और क्रूज सेवाओं की सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की संभावना बढ़ गई है।

मुख्य सचिव से समीक्षा बैठक का आग्रह

आईडब्ल्यूएआई अध्यक्ष ने मुख्य सचिव अनुराग जैन से संबंधित विभागों और प्राधिकरणों के साथ विस्तृत समीक्षा बैठक करने तथा आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने का आग्रह किया है। पत्र में कहा गया है कि सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन ही यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और जल परिवहन व्यवस्था में लोगों का भरोसा बनाए रखने का सबसे प्रभावी उपाय है। गौरतलब है कि 30 अप्रैल 2026 को जबलपुर के बरगी डैम क्षेत्र में एक टूरिस्ट क्रूज बोट खराब मौसम और तेज लहरों के कारण पलट गई थी। हादसे के समय नाव में करीब 35 से 40 लोग सवार थे, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। इस दुर्घटना में कई लोगों की जान चली गई थी, जिसके बाद सुरक्षा व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल उठे थे।